atulyabhaskar9@gmail.com

प्रसार क्षेत्र - सागर, भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर, उज्जैन, नरसिंहपुर, दमोह, छतरपुर, टीकमगढ़, पन्ना

सुविचार

नेत्र हमे केवल दृष्टि प्रदान करते हैं परंतु हम कब.. किसमें क्या देखते हैं ये हमारी भावनाओं पर निर्भर करता है...।

दैनिक

अतुल्य भास्कर

पेज - 2 पर

वर्ष - 5 / अंक - 33

सागर, 20 सितम्बर 2021, सोमवार

पृष्ठ - 8 / मूल्य - 2.00 ₹

भाजपा प्रत्याशी डॉ. मुरुगन कल दाखिल करेंगे नामांकन

भोपाल। मप्र राज्यसभा की एक सीट के लिए भाजपा प्रत्याशी केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्रालय में राज्य मंत्री डॉ.,एल मुरुगन 21 सितंबर को भोपाल आएंगे। डा.

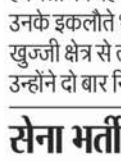

मुरुगन मंगलवार को विधानसभा में अपना नामांकन दाखिल करेंगे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा मौजूद रहेंगे। बीजेपी के प्रदेश मंत्री राहुल कोठारी ने बताया कि. मुरुगन का सोमवार को भोपाल आने का कार्यक्रम था, लेकिन रविवार देर शाम निरस्त हो गया है। वे अब मंगलवार को भोपाल पहुंचेंगे। वे किस समय नामांकन पत्र भरेंगे, यह फिलहाल तय नही हुआ है। बता दें कि मुरुगन जब मार्च 2020 में बीजेपी की तमिलनाडु इकाई के अध्यक्ष बने थे तब उनके पास विधानसभा चुनाव की तैयारी करने के लिए मुश्किल से एक साल का समय था। बावजूद इसके उनका प्रदर्शन शानदार रहा।

पूर्व मंत्री राजिन्दरपाल सिंह भाटिया ने फांसी लगाकर जान दी

राजनांदगांव। राज्य के भाजपा नेता और पूर्व मंत्री ने राजिन्दरपाल सिंह भाटिया ने फांसी लगाकर अपनी जान दे दी। छुरिया निवासी तीन बार के विधायक और पूर्व मंत्री

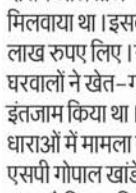

राजिन्दरपाल सिंह भाटिया के इस कदम से इलाके में सनसनी फैल गई। घटना शाम की बताई जा रही है। कारणों का अभी खुलासा नहीं हुआ है पुलिस मौके पर पहुंची और घर को सील किया गया है। भाटिया कोरोना की दूसरी लहर में संक्रमित हो गए थे। उसके बाद से वे अपने स्वास्थ्य को लेकर काफी दिनों से परेशान चल रहे थे।उनके परिवार में एक बेटा लक्की भाटिया है। वह रायपुर में जमीन के कारोबार के अलावा एक निजी अस्पताल में साझीदार भी हैं। पत्नी की पहले ही मृत्यु हो चुकी है। कुछ साल पहले उनके इकलौते भाई का भी निधन हो गया था। भाटिया खुज्जी क्षेत्र से तीन बार विधायक चुने गए थे।उसके बाद उन्होंने दो बार निर्दलीय भी विधानसभा चुनाव लड़ा था।

सेना भर्ती के नाम पर बड़ा फर्जीवाड़ा, 9 युवक गिरफ्तार

जबलपुर। सेना में भर्ती के नाम पर बड़ा फर्जीवाड़ा सामने आया है। जबलपुर स्थित ग्रेनेडियर्स रेजीमेंटल सेंटर (जीआरसी) में ट्रेनिंग के लिए आए 9 युवक के पकड़े जाने

के बाद यह खुलासा हुआ। सभी के पास फर्जी नियुक्ति पत्र पाए गए हैं। इन्हें वाराणसी स्थित छावनी क्षेत्र के मेजर अजय कपूर के नाम का लेटर देकर ट्रेनिंग सेंटर पर भेजा था, जबकि इस नाम के अफसर की वहां कोई पोस्टिंग ही नहीं है। भर्ती के दौरान जालसाज ने इस कथित मेजर को वर्दी में युवकों से मिलवाया था। इसके बाद भर्ती के एवज में उसने 5-5 लाख रुपए लिए। सभी साधारण परिवार से हैं और उनके घरवालों ने खेत-गहने बेचकर और कर्ज लेकर पैसों का इंतजाम किया था। पुलिस ने धोखाधड़ी समेत विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। एसपी गोपाल खांडेल के मुताबिक, प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि यह गिरोह यूपी और उत्तराखंड में सक्रिय है।

पद संभालने के बाद रूस-अमेरिका जाएंगे सीडीएस बिपिन रावत

नई दिल्ली। बिपिन रावत सीडीएस जनरल का पदभार संभालने के करीब दो साल बाद अपने पहले विदेश दौरे पर जाएंगे। बताया गया है कि अपने पहले दौरे पर वे रूस और

अमेरिका पहुंचेंगे। जनरल रावत ने 31 दिसंबर 2019 को सीडीएस पद संभाला था। इसके बाद से ही उन्हें लगातार विदेश से कार्यक्रम के न्योते मिलते रहे, लेकिन भारत में रक्षाबलों को मजबूत बनाने के कार्यभार के चलते वे लगातार इन्हें टालते रहे। एक वरिष्ठ रक्षा अधिकारी ने एक कार्यक्रम की जानकारी देते हुए कहा, शंघाई सहयोग समझौते (एससीओ) के सदस्य देशों के बीच सीडीएस रैंक के अफसरों की एक कॉन्फ्रेंस है। चीन और पाकिस्तान भी इसका हिस्सा हैं। बताया गया है कि सीडीएस इसमें क्षेत्रीय सुरक्षा के मुद्दों के साथ अफगानिस्तान पर भी चर्चा करेंगे।

रतलाम-आगर में भारी बारिश, रेलवे ट्रैक डूबा, कई गाड़ियां बहीं

दोनों शहरों में 6 इंच तक पानी गिरा, घर-दुकानों में पानी घुसा

अतुल्य भास्कर, भोपाल/रतलाम

मध्यप्रदेश में मानसून अपने आखिरी दौर में भी जमकर बारिश हो रही है। पिछले 24 घंटों के दौरान आगर-मालवा और रतलाम में 6 इंच तक बारिश ने बाढ़ के हालात बना दिए। नदी और नालों के उफान पर आने से रतलाम जिले में पानी के तेज बहाव में एक कार और एक बाइक बह गई। ग्रामीणों ने कार सवार युवक को बड़ी मुश्किल से बचाया। अन्य जगह भी गाड़ियां बहने की खबरें हैं। रतलाम शहर के डाट की पुल, सैलाना बस स्टैंड और निचले रिहायशी इलाकों में पानी भर गया है। रेलवे स्टेशन के ट्रैक पर भी पानी भर गया, हालांकि फिलहाल ट्रेनें रोकने की नौबत नहीं आई है। ढाई बजे ट्रैक से पानी उतर गया।

मंदसौर में भी बारिश से स्थिति खराब

मंदसौर में बीते 24 घंटे से हो रही झमाझम बारिश ने जिले को तरबतर कर दिया है। पिछले 24 घंटों में जिले में सवा इंच बारिश रिकॉर्ड की गई है। वहीं जिले की औसत बारिश 33 इंच को पार करते हुए 33.39 इंच तक पहुंच गया है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों के कई इलाकों में बनी छोटी पुलियों और रपटों के ऊपर तक पानी आ गया है। नाहरगढ़-बिल्लोड़ पुल के ऊपर तक पानी बहने से यहां पुल के दोनों ओर सैकड़ों वाहनों की लाइन लग गई है।

फिर तेज होगा बौछारें पड़ने का सिलसिला

बंगाल की खाड़ी में हवा के ऊपरी भाग में एक चक्रवात बना हुआ है। एक कम दबाव का क्षेत्र पूर्वी राजस्थान और उससे लगे उत्तर-पश्चिम मध्यप्रदेश पर बना है। इसके अतिरिक्त मानसून ट्रफ भी मप्र से होकर गुजर रहा है। इन तीन वेदर सिस्टम के सक्रिय रहने से अधिकांश जिलों में रुक-रुककर बारिश हो रही है। मौसम विज्ञानियों के मुताबिक सोमवार को जबलपुर, भोपाल, इंदौर, उज्जैन संभागों के जिलों में तेज बौछारें पड़ने की संभावना विशेषकर उज्जैन संभाग में कहीं-कहीं भारी वर्षा भी हो सकती है।

मध्यप्रदेश में चतुर्दशी पर हुए बड़े हादसे, 10 की मौत

गणेश विसर्जन के दौरान तालाब में डूबने से 4 बच्चों की मौत

अतुल्य भास्कर, भिंड/छिंदवाड़ा/गुना

भिंड के मेहगांव में गणेश विसर्जन के दौरान तालाब में डूबने से 4 बच्चों की मौत हो गई। गोताखोरों की मदद से बच्चों को पानी के अंदर से निकाला गया। इनमें से तीन की मौत हो गई, जबकि चौथे को अस्पताल में मृत घोषित कर दिया। धड़कनें चल रही थीं, इसलिए उसे ग्वालियर रेफर किया गया था। भिंड एसपी ने इसकी पुष्टि की है। दो अन्य बच्चे भी लापता बताए जा रहे हैं। उनकी तलाश गांव और तालाब दोनों जगह की जा रही है। मेहगांव कस्बे में वनखंडेश्वर महादेव मंदिर के पास तालाब में रविवार को गणेश विसर्जन का आयोजन चल रहा था। इसमें बच्चे भी शामिल थे। वे गणेश प्रतिमा का विसर्जन करते समय गहरे पानी में चले गए। एक के बाद एक डूब गए। पुलिस ने शव पीएम कराने के लिए पोस्टमार्टम हाउस में रखवा दिए हैं। मृत बच्चों की पहचान मेहगांव के गण मौ रोड के रहने वाले अभिषेक पुत्र राजू कुशवाह, सचिन पुत्र मधुराज राजावत, हर्षित पुत्र कृष्णवीर राजावत , प्रशांत पुत्र राजू कुशवाह रूप में हुई है। सभी की उम्र 12- 13 साल के बीच थी। रेडक्रॉस ने परिवार को दाह संस्कार के लिए 10-10 हजार रुपए की मदद की है।

छिंदवाड़ा में दो युवक डूबे

वहीं, दूसरी ओर छिंदवाड़ा में रविवार को दो अलग-अलग घटनाओं में दो युवक डूब गए। अंबाडा में बंद खदान में गणेश प्रतिमा विसर्जन के दौरान एक युवक, जबकि न्यूटन के स्टाफ डेम में दोस्तों के साथ नहाने गया एक युवक डूब गया। घटना स्थल पर पुलिस तलाश में जुटी है। फिलहाल अभी तक का शव नहीं मिला है।

गुना में नदी में डूबने से युवक की मौत

गुना के बजरंगगढ़ में अनंत चतुर्दशी के अवसर पर प्रतिमा का विसर्जन करने गए एक युवक की नदी में डूबने से मौत हो गई। प्रशासन द्वारा तय की गई जगह छोड़कर दूसरी जगह प्रतिमा का विसर्जन किया जा रहा था। इसी दौरान एक युवक डूब गया। जब तक पुलिस पहुंची, युवक का शव बाहर निकाल लिया गया था। अस्पताल में डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

सतना में तालाब में डूबे पांच बच्चे, तीन की मौत

सतना। जिले के मैहर तहसील अंतर्गत नादन थाना क्षेत्र के जूरा गांव में आज शाम लगभग साढ़े चार बजे तालाब में नहाने गए पांच बच्चे डूब गए। इस हादसे में तीन बच्चों की जहां मौत हो गई है वहीं दो बच्चे बच गए हैं। घटना की जानकारी लगते ही मैहर तहसीलदार मानवेंद्र सिंह सहित नादन थाना प्रभारी एचएल मिश्रा और एसडीओपी हिमाली सोनी मौके पर पहुंच गई। पहले दो बच्चों के शव को बरामद किया गया उसके बाद तीसरे बच्चे का शव भी कुछ देर बाद बरामद कर लिया गया है। बच्चों के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। मृतक सभी बच्चों की उम्र 10 वर्ष बताई जा रही है। इस दर्दनाक घटना के बाद पूरे क्षेत्र में हड़कंप मच गया है। बताया जा रहा है कि ये बच्चे जूरा गांव ही हैं जो कि इकट्ठा होकर तालाब में नहाने गए थे।

छग में भीषण सड़क हादसे में 8 की मौत

कोंडागांव ■ एजेंसी

छत्तीसगढ़ के कोंडागांव जिले में रविवार को भीषण सड़क हादसा हो गया है। हादसे में 8 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई है। स्कॉर्पियो और ऑटो की टक्कर से ये हादसा हुआ है। हादसे में 9 से ज्यादा लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं। जिन्हें रायपुर रेफर किया गया है। एक ही परिवार के 16 लोग ऑटो से गमी के कार्यक्रम से लौट रहे थे। इसी दौरान झारखंड से जगदलपुर जा रही स्कॉर्पियो ने टक्कर मार दी। हादसा इतना जबरदस्त था कि स्कॉर्पियों और ऑटो के परखच्चे उड़ गए हैं। मृतकों के शरीर भी सड़क पर ही पड़े रहे। आसपास के लोगों को जब खबर लगी तब इस बात की जानकारी पुलिस को दी गई है। हादसा कोंडागांव जिले के बोरगांव के पास हुआ है। बताया गया है कि सभी ऑटो सवार पांडे आठगांव से गोड़मा जा रहे थे। ऑटो में महिला-बच्चों समेत 16 लोग सवार थे। इधर, स्कॉर्पियो में भी कुछ लोग सवार थे। अचानक बोरगांव के पास दोनों गाड़ियों की टक्कर हो गई। पता चला है कि स्कॉर्पियो सवार लोग झारखंड से जगदलपुर की ओर आ रहे थे। आसपास के लोगों ने बताया है कि मरने वालों में कुछ महिलाएं, बच्चे और पुरुष शामिल हैं।

ऑटो में थे 16 लोग सवार

पांडे आटगांव के नेताम-मरकाम परिवार के महिलाएं, बच्चे और पुरुष एक गमी के कार्यक्रम में पास के ही गांव गोड़मा गए थे। ये लोग दोपहर उस कार्यक्रम से लौट रहे थे। इस समय ऑटो में चालक सहित कुल 16 लोग थे। ओवरलोड ऑटो जैसे ही बोरगांव पुलिस ट्रेनिंग कैंप के सामने पहुंचा। चालक ने सीधे हाथ की दिशा में मोड़ने की कोशिश की। ऑटो में इतने लोग होने के कारण उसका नियंत्रण छूट गया और वह सीधे सड़क के बीच आ गया। इसी दौरान जगदलपुर की ओर जा रही तेज रफ्तार स्कार्पियो के चालक को कुछ समझ में आता भिड़ंत हो चुकी थी। धमाके की आवाज के साथ दोनों वाहन पलट गए और आटो में सवार लोग सड़क पर बिखर गए। पीटीएस के गार्ड और आसपास के लोगों ने तुरंत मदद बुलाई, लेकिन 8 लोगों की जान नहीं बच सकी।

मुख्यमंत्री निवास में निर्मित जल-कुण्ड में हुआ गणेश प्रतिमा का विसर्जन

भोपाल। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अनंत चतुर्दशी के अवसर पर मुख्यमंत्री निवास में निर्मित जल-कुण्ड में भगवान श्री गणेश प्रतिमा का विसर्जन किया। मुख्यमंत्री चौहान ने प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि के लिए प्रार्थना की। मुख्यमंत्री आवास परिसर के छह नम्बर गेट के निकट निर्मित जल-कुण्ड तक लघु चल समारोह में श्री चौहान की धर्मपत्नी श्रीमती साधना सिंह एवं पुत्र कुणाल सिंह तथा निवास कार्यालय के अधिकारी-कर्मचारी, सुरक्षा स्टाफ शामिल हुए। मुख्यमंत्री निवास में बैंड दल और भजन मंडली ने श्रद्धा, भक्ति-भाव और उल्लास से भगवान गणपति के भजन प्रस्तुत किए। गणपति बप्पा मोरिया अगले बरस तू जल्दी आ.....और अन्य भगवान गणेश स्तुति गीतों के साथ चल समारोह में मुख्यमंत्री श्री चौहान निकट परिजन सहित सम्मिलित हुए। भक्तों को प्रसाद वितरण के साथ श्रीगणेश प्रतिमा विसृजन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पंजाब के नए सीएम का ऐलान

चरणजीत सिंह चन्नी बने पंजाब के नए मुख्यमंत्री, आज लेंगे शपथ

जालंधर ■ एजेंसी

कैप्टन अमरिंदर सिंह के इस्तीफे के 24 घंटे बाद आखिरकार पंजाब के नए मुख्यमंत्री का नाम तय हो गया। कांग्रेस के दलित नेता चरणजीत सिंह चन्नी राज्य के नए ष्टरूहोंगे। पंजाब में पार्टी इंचार्ज हरीश रावत ने ट्वीट करके चन्नी के कांग्रेस विधायक दल का नेता चुने जाने की जानकारी दी। चन्नी रामदासिया सिख कम्युनिटी से हैं। इधर, खबर मिली है कि सुखजिंदर रंधावा और ब्रह्म मोहिंद्रा को डिप्टी सीएम बनाया जाएगा। चन्नी के कांग्रेस विधायक दल का नेता चुने जाने के बाद कांग्रेस के प्रभारी हरीश रावत उन्हें लेकर राज्यपाल से मिलने पहुंचे। नवजोत सिंह सिद्धू और सुखजिंदर सिंह रंधावा भी उनके साथ गए। इस मुलाकात के बाद चरणजीत चन्नी ने कहा कि सोमवार सुबह 11 बजे शपथ ग्रहण होगा। चरणजीत सिंह चन्नी चमकौर साहिब से लगातार 3 बार विधायक बने। 2007 में उन्होंने निर्दलीय चुनाव जीता था। इसके बाद 2 बार कांग्रेस की टिकट पर रूरूबने। 2015 से 2016 तक पंजाब विधानसभा में विपक्ष के नेता रहे। 2017 में कैप्टन अमरिंदर सिंह की सरकार में उन्हें टेक्निकल एजुकेशन और इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग मंत्री बनाया गया था।

जनता की नब्ज टटोलेंगे मोहन भागवत

संघ पता लगाएगी शिवराज सरकार खरी है या खोटी

अतुल्य भास्कर, भोपाल/इंदौर

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघके सर संघचालक डॉ.मोहन भागवत 21 और 22 सितंबर को दो दिवसीय प्रवास पर इंदौर आयेंगे हैं। उनके दौरे से पहले सियासत भी गरमा सकती है। प्रवास के दौरान भागवत सत्ता और संगठन का फीड बैक लेंगे। समाज के प्रबुद्धजनों से मुलाकात कर वे समाज पर सरकार के कामों का असर और उसकी छवि का पता लगाएंगे। उनकी आरएसएस के अनुषांगिक संगठनों के प्रतिनिधियों से भी मुलाकात होगी। इस मुलाकात के दौरान जमीनी स्तर पर किए जा रहे संघ के कामों की समीक्षा की जाएगी। जानकारी के मुताबिक, कोरोना गाइडलाइन के चलते उनका कोई सार्वजनिक कार्यक्रम नहीं होगा और न ही कोई बड़ी बैठक होगी। दो दिनों तक वे इंदौर के विशिष्टजनों, शिक्षाविदों और स्टार्टअप करने वाले युवा

उद्यमियों से चर्चा करेंगे. गौरतलब है कि इन दिनों युवाओं पर संघ का ज्यादा फोकस है। यही वजह है कि मोहन भागवत अपनी इंदौर यात्रा के दौरान युवा उद्यमियों से मुलाकात करेंगे। मध्य प्रदेश में 2023 में होने वाले विधानसभा चुनाव और 2024 के लोकसभा चुनाव में मंहगाई और बेरोजगारी जैसे मुद्दे कितने हावी होंगे, इसका आंकलन भी इन मुलाकातों से किया जाएगा।

संघ प्रमुख के प्रवास के दौरान उम्मीद है कि बीजेपी के कई बड़े नेता भी मुलाकात के लिए यहां पहुंच सकते हैं। संघ प्रमुख के प्रवास से मीडिया को दूर रखा गया है। बीजेपी के प्रवक्ता उमेश शर्मा का कहना है कि सर संघचालक के इस प्रकार के प्रवास संघ की कार्यपद्धति का एक अंग है। इस बार का उनका प्रवास संपर्क पर केन्द्रित रहेगा और वे समाज के विभिन्न वर्गों से संवाद करेंगे. वे प्रबुद्धजनों के साथ ही राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाने वाले युवा वर्ग, विशेषकर जिन्होंने नवाचार कर स्टार्टअप शुरू किए हैं, लीक से हटकर समाज को कुछ देने का प्रयास कर रहे हैं, उनसे भेंट करेंगे।

अपनी ही सरकार को घेर रहीं पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती

इधर, पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती ने अपनी ही सरकार के खिलाफ डंडा उठाने की तैयारी कर ली है। उमा भारती शराबबंदी के मुद्दे पर सरकार के खिलाफ मोर्चा खोलने को तैयार हैं। उन्होंने कहा कि वे 15 जनवरी के बाद सड़कों पर उतरेंगी। उनका कहना है कि सीएम शिवराज सिंह चौहान और प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने जनजागरुकता के लिए 6 महीने का समय दिया है। इसके बाद शराबबंदी में सुधार नहीं हुआ तो वे डंडा लेकर सड़कों पर निकलेंगी।

मप्र में आज से खुलेंगे 5वीं तक के स्कूल

भोपाल। मध्यप्रदेश में 18 महीने बाद 20 सितंबर से कक्षा पहली से लेकर कक्षा पांचवी तक के स्कूल खुलने जा रहे हैं। 18 महीनों के बाद कल यानी 20 सितंबर को पहली बार कक्षा 1 से से 5वीं तक के बच्चे स्कूल पहुंचेंगे। स्कूल खुलने से पहले स्कूलों की साफ सफाई के साथ सैनिटाइजेशन का काम किया जा रहा है। वहीं शिक्षकों का इस बारे में कहना है कि इस बार बच्चों के स्कूल पहुंचने पर सुरक्षा को लेकर उनकी भी जिम्मेदारियां बढ़ गई हैं। बता दें कि स्कूल खुलने के साथ प्राइमरी स्कूलों में 50 फ़ीसदी क्षमता के साथ कक्षाओं का संचालन होगा। पहले दिन स्कूल बुलाने वाले बच्चों को व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से माता-पिता को मैसेज किया गया है. खास बात यह है कि स्कूलों में माता-पिता की लिखित सहमति अनिवार्य होगी। माता-पिता की लिखित सहमति पत्र के बिना छात्र छात्राओं को क्लास रूम में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

10 दिनों के उत्सव के बाद विदा हुए गजानन...

आरटीई के तहत निशुल्क प्रवेश के लिए संशोधित समय सारणी जारी

अतुल्य भास्कर, सागर। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत शैक्षणिक सत्र 2020-21 के लिए गैर अनुदान मान्यता प्राप्त अशासकीय स्कूलों में ऑनलाइन निरूशुल्क प्रवेश प्रक्रिया की संशोधित समय सारणी जारी की गई है। संचालक, राज्य शिक्षा केंद्र धनराजू एस. ने बताया कि 20 सितंबर 2021 तक पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन और त्रुटि सुधार के लिए विकल्प उपलब्ध रहेगा। ऑनलाइन आवेदन करने के पश्चात अभिभावक 22 सितंबर 2021 तक पावती डाउनलोड और मूल दस्तावेजों का केंद्रों में सत्यापन करा सकेंगे। श्री धनराजू ने बताया कि 28 सितंबर को पारदर्शी रैंडम पद्धति से ऑनलाइन लॉटरी खोली जायेगी। ऑनलाइन लॉटरी से आवेदकों को स्कूल का आवंटन किया जायेगा और चयनित आवेदकों को एस.एम.एस. से भी सूचित किया जाएगा। लॉटरी में चयनित आवेदक 28 सितंबर से 8 अक्टूबर 2021 के बीच आवंटन पत्र डाउनलोड करके आवंटित स्कूल में प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे।

गणपति बप्प मोरया, अगले बरस तू जल्दी आ... गाजे बाजे के साथ शहर में निकले चल समारोह

मोहन नगर वार्ड बाबा कुआ गणपति जी का चल समारोह धूमधाम से निकाला गया जिसमें बड़ी संख्या में महिलाये शामिल हुई।

अतुल्य भास्कर, सागर

रविवार को गणेश विसर्जन को लेकर शहर में जगह-जगह हवन पूजन के बाद गणेश विसर्जन किया गया। सडकों पर ढोल नगाड़ों के साथ चल समारोह निकाले गए। भक्ती में लीन युवा गजानन की विदाई में शामिल हुए। गणपति बप्पा मोरया, अगले बरस तू जल्दी आ के जयकारे गूंजते रहे। गणेशजी की विदाई के पहले शनिवार की शाम प्रतिमा स्थलों पर श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। कुछ पंडालों में एक दिन पहले शनिवार को ही हवन पूजन कार्यक्रम संपन्न हो गया वहीं कुछ जगह रविवार को हवन-पूजन के बाद गणेशजी की विदाई की गई।

विसर्जन को लेकर नगर निगम का अमला भी तैयारियां कर चुका है। भोपाल रोड स्थित लेहदरानाका नदी पर श्री गणेश विसर्जन की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। नगर निगम आयुक्त आरपी अहिरवार, निगम उपायुक्त डॉ. प्रणय कमल खरे ने निगम अधिकारियों के साथ नदी के घाट पर पहुंचकर निरीक्षण किया।

प्रतिमा विसर्जन स्थल पर इस बार नदी पर पक्के घाटों का निर्माण कराया गया है, ताकि रात्रि में भी घाट स्पष्ट दिखाई दें। इसलिए उन पर रंग रोगन किया गया है तथा घाट पर रंग बिरंगे झंड़े भी लगाए हैं। लाइट सहित विसर्जन स्थल के आसपास पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था की गई है ताकि रात्रि में कोई परेशानी ना हो। प्रतिमा विसर्जन स्थल पर आने वाले वाहनों को आने और जाने के लिए अलग-अलग व्यवस्था की गई है। प्रतिमा विसर्जन हेतु नाव एवं तैराक को भी लगाया गया है। निगम द्वारा वार्डवार घर-घर पहुंचकर विसर्जन के लिए प्रतिमाएं एकत्रित करने आठ टैक्ट्रर ट्रालियां भी वार्ड-वार्ड घूम रहीं हैं।

दद्दा जी का जन्मदिन अनंत चतुर्दशी को धूमधाम से मनाया गया

ब्रह्मलीन गृहस्थ सन्त पंडित देवप्रभाकर शास्त्री दद्दा जी का जन्मदिन हिन्दी तिथि अनुसार अनंत चतुर्दशी को मनाया जाता है दद्दा जी के ब्रह्मलीन शिष्य वीरेंद्र गौर द्वारा दद्दा जी-गुरु माँ के मंदिर निर्माण की नींव दीनदयाल नगर स्थित रामदरबार मन्दिर में रखी थी मन्दिर निर्माण के पश्चात प्रथम जन्मदिन को दद्दा शिष्य मंडल सागर ने बड़े धूमधाम से मनाया जन्मोत्सव पर प्रातः 8 बजे से शिवलिंग निर्माण और 10:30 महाआरती का आयोजन हुआ इसके उपरांत शहर विभिन्न स्थानो पर प्रसादी फल वितरण किये गए कार्यक्रम के दौरानश्री सुरेन्द्र सुहाने उत्तम सिंह ठाकुर अजीत सिंह ठाकुर गुलाब सिंह राजपूत लक्ष्मण सिंह प्रमोद उपाध्याय राजकुमार तिवारी गड़र ब्रृजेश तिवारी नारायण प्रजापति (पूर्व विधायक) प्रदीप लारिया (विधायक) मनोज डेगरे संजय जडिया माधव काटारे मधु गुप्ता गुड्डू पाठक केशव पंडित जी आनंद ददरिया अखलेश गौर रीतेश तिवारी सुखदेव मिश्रा विद्या उपाध्याय अंजुल शुक्ला मुकेश वैश्य ब्रृजेन्द्र रजक अजय रावत नितिन रठौर निश्चय सोनी हेमंत रैकवार संचित गुरु कमलेश पटैल चंदन सुहाने संदर्भ कठल देवेन्द्र गौर पंप्पू ठाकुर राजा रिछारिया गुड्डे अग्रवाल अभिषेक गौर महेन्द्र गोस्वामी राजेश तिवारी गोल्डी ठाकुर मुकेश तिवारी शील चौबे सत्येन्द्र सूर्येश अजय साहू आदि उपस्थित रहे।

272 टीकाकरण केन्द्रों पर आज लगाई जाएगी वैक्सीन

अतुल्य भास्कर, सागर

कोविड-19 वैक्सीनेशन महा-अभियान चलाया जा रहा है। जिले में सोमवार 20 सितम्बर को हितग्राही अपना टीकाकरण 272 वैक्सीनेशन केन्द्रों पर कोवीशील्ड एवं को-वैक्सीन का प्रथम एवं द्वितीय डोज अवश्य लगवायें। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सुरेश बौद्ध ने बताया कि तीसरी लहर के संक्रमण को रोकने हेतु हितग्राही कोविड-19 के दोनो टीके अवश्य लगवायें। यह एक सुरक्षा कवच है जिन हितग्राहियों के प्रथम डोज का अंतराल समाप्त हो गया है। वह द्वितीय डोज नजदीकी टीकाकरण केन्द्र पर जाकर अवश्य लगवायें। कोविड-19 टीका पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं इसमें किसी भी प्रकार के भ्रम में न रहें और अफवाहों पर विष्वास न करें। कोविड-19 की गाईडलाइन पालन अवश्य करें जैसे-टीकाकरण पूर्व एवं पश्चात मास्क अवश्य पहने,हाथ बार-बार धोते रहे,दूरी दो गज की है जरूरी,भीड़-भाड़ वाली जगहों में जाने से बचें और अनावश्यक घर से बाहर न निकले।

वैक्सीन निश्चित, जीवन सुरक्षित। सभी स्वास्थ्य कार्यकताओं को आदेशित किया गया है कि घर-घर जाकर हितग्राहियों एवं गर्भवती महिलाओं का भी टीकाकरण कराना सुनिश्चित किया जावे।

10वीं एवं 12वीं में 80% प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं का सम्मान

- जिले के प्रतिभावान छात्रों का हुआ सम्मान

अतुल्य भास्कर, सागर

तिली स्थित चौरसिया धर्मशाला में अखिल भारतीय सर्व चड़ार-चिड़ार समाज सभा के द्वारा 10वीं एवं 12वीं में 80 प्रतिशत एवं इसके ऊपर अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं का प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसमें जिले के अलग-अलग तहसीलों व ग्रामों से प्रतिभावान छात्र छात्राएं उपस्थित हुए। मुख्य अतिथि के रूप में समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष किशोरी लाल चढ़ार जबलपुर, विधायक शैलेंद्र जैन, मुख्य संरक्षक तुलाराम आठया, सामाजिक कार्यकर्ता जयश्री चढ़ार, रमाकांत आठया मौजूद रहे। विधायक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा प्रतिभावान छात्र छात्राओं को मेडल एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। उच्च शिक्षा के लिए बाहर से आने वाले छात्र-छात्राओं को रुकने की व्यवस्था करने के लिए एक विश्राम भवन के निर्माण की बात रखी गई। विधायक शैलेंद्र जैन ने अपनी ओर से 5 लाख की राशि देने की घोषणा की। इसके अलावा सभी समाज बंधुओं से इस नेक कार्य में बढ़-चढक? हिस्सा लेने का आह्वान किया गया। इस मौके पर पुनः सागर जिले की महिला कार्यकारिणी एवं युवा कार्यकारिणी घोषित की गई। जिसमें महिला कार्यकारिणी से जयंती आठया को जिला अध्यक्ष एवं युवा कार्यकारिणी से रामकृष्ण आठया एवं अभिषेक आठया केसली को जिला अध्यक्ष घोषित किया गया। जयश्री चढ़ार को अखिल भारतीय सर्व चड़ार-चिड़ार समाज सभा की महिला प्रदेश अध्यक्ष राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा घोषित किया गया। कार्यक्रम का संचालन जयश्री चढ़ार ने किया। आभार रमाकांत आठया ने प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर राम चढ़ार, दुर्गा प्रसाद चढ़ार, वृंदावन आठया, भगवत चढ़ार पहलाद आठया, राकेश आठिया, कमलेश आठिया, रामकृष्ण आठिया पटवारी, एडवोकेट तुलसीराम चढ़ार, एडवोकेट रमा चढ़ार, चंदा आठया, रानी चढ़ार, शीला आठया, लक्ष्मी, बंटी, रीना, विद्या, जयंती एवं बड़ी संख्या में समाज के लोग मौजूद रहे।

अंततः जिंदगी की जंग हार गई मेधावी छात्रा साक्षी राजोरिया

अतुल्य भास्कर, सागर

वर्ष 2020 की 12वीं की परीक्षा में वात्सल्य स्कूल से 98 परसेंट से अधिक अंक अर्जित करने बाली मेधावी छात्रा साक्षी राजोरिया अंततोगत्वा जिंदगी की जंग हार कर गत दिवस काल के गाल में समा गई ज्ञात हो कि इसके पूर्व दसवीं की परीक्षा में भी उसने मेरिट में स्थान बनाया था और 12वीं के रिजल्ट में उच्च स्थान अर्जित करने के समाचार जैसे ही पब्लिक डोमेन में आए वैसे ही कुछ दिनों पश्चात वह -एसएलई की विचित्र बीमारी से ग्रसित हो गई और डॉक्टरों ने लीवर ट्रांसप्लांट की सलाह दी जिस पर उसके शुभचिंतक परिजनों ने शासन प्रशासन के साथ ही सभी से आर्थिक सहयोग की अपील की और काफी धनराशि एकत्र भी हुई तथा प्रदेश के मुख्यमंत्री ने भी पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया किंतु लंबे इलाज के पश्चात इस बीमारी ने 20 वर्षीय इस होनहार छात्रा की किडनी को अपनी गिरफ्त में ले लिया और क्रेटिनिन स्तर लगातार बढ़ने लगा पिता सुधीर राजोरिया हाल फिलहाल बेरोजगार है और माता साधना राजोरिया शासकीय अध्यापक संवर्ग की शिक्षक हैं मामा केस्ली के उपाध्याय एडवोकेट और परिजन आगे इलाज कराने की तैयारी कर ही रहे थे कि गत दिवस माता-पिता की इकलौती संतान इस होनहार छात्रा को काल ने अपनी आगोश में समेट लिया जिसने भी इस खबर को सुना वह स्तब्ध रह गया और वात्सल्य स्कूल के उसके सभी सहपाठी अश्रुपूरित श्रद्धांजलि देने उपस्थित हो।

कलेक्टर्स-कमिश्नर्स कॉन्फ्रेंस से संबंधित एजेंडा वार बिंदुओं की डीएम ने की समीक्षा, कॉन्फ्रेंस आज

अतुल्य भास्कर, सागर

सोमवार को आयोजित होने वाली कलेक्टर-कमिश्नर कांफ्रेंस के संबंध में कलेक्टर दीपक आर्य की अध्यक्षता में रविवार को एक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। समीक्षा बैठक में जिला अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में कलेक्टर-कमिश्नर कांफ्रेंस के एजेंडा से संबंधित विभिन्न विषयों की विस्तृत समीक्षा की गई। बैठक में विगत कलेक्टर-कमिश्नर कॉन्फ्रेंस का पालन प्रतिवेदन, प्रदेश में माफियाओं के विरुद्ध कार्यवाही, महिला अपराध एवं आगामी त्यौहारों को दृष्टिगत रखते हुए कानून-व्यवस्था की समीक्षा। इसके साथ ही विभिन्न कोविड कल्याण योजनाओं के क्रियान्वयन की भी समीक्षा की गई। कलेक्टर आर्य ने निर्देश दिए कि समस्त पात्र व्यक्तियों को योजना एवं सहायता का लाभ मिल सके, इसके लिए आवश्यक कार्यवाही पूर्ण करते हुए सभी आवश्यक दस्तावेज शासन को शीघ्रता से भेजना सुनिश्चित करें। कलेक्टर दीपक आर्य ने वृक्षारोपण कार्यक्रम, एक जिला-एक उत्पाद योजना का क्रियान्वयन, जिलों में पी.एस.ए. ऑक्सीजन प्लांट की स्थिति, जिला स्तर पर सोशल मीडिया प्रबंधन, जल जीवन मिशन का जमीनी क्रियान्वयन आदि समस्त विषयों की अद्यतन स्थिति की भी जानकारी ली। उन्होंने जिला उद्योग केंद्र के महाप्रबंधक को निर्देश दिए कि वे एक जिला-एक उत्पाद योजना के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम को शीघ्र पूरा करें।

उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान स्व-सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं की समाज में सशक्त भागीदारी के साथ-साथ उनकी बहुमुखी प्रगति के लिए निरंतर कृत संकल्पित हैं। इस दिशा में जिले में स्व सहायता समूहों को दिलाये गए क्रेडिट लिंकेज का महत्वपूर्ण योगदान है। अतः इस कार्यक्रम का क्रियान्वयन लगातार सुचारू रूप से किया जाना सुनिश्चित करें।

इसके अतिरिक्त उन्होंने राइस मिलिंग और खाद्यान्न के उठाव की स्थिति, विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत रोजगार उपलब्ध कराए जाने की स्थिति तथा आगामी रोजगार मेलों के आयोजन की भी समीक्षा की।

इस अवसर पर एडीएम अखिलेश जैन, संयुक्त कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी, समस्त एसडीएम सहित अन्य जिला अधिकारी उपस्थित थे।

जनसुनवाई 21 से पुनः प्रारंभ

अतुल्य भास्कर, सागर। मध्यप्रदेश शासन, सामान्य प्रशासन विभाग, मंत्रालय वल्लभ भोपाल द्वारा पूर्व की भांति जनसुनवाई कार्यक्रम मंगलवार 21 सितंबर से पुनः प्रारंभ किए जाने के संबंध में निर्देश जारी किए गए है। इस संबंध में कलेक्टर दीपक सिंह ने समस्त जिला प्रमुखों को निर्देश दिए है कि पूर्व की भांति प्रत्येक मंगलवार को कलेक्टर कार्यालय में जनसुनवाई हेतु अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि 21 सितंबर को कार्यालयों में जनसुनवाई प्रारंभ करावें, ताकि आमजनों की समस्या का निराकरण हो सके।

ग्राम बाड़ीपुरा में बुजुर्ग से मारपीट कर किया अधमरा

अतुल्य भास्कर, धार। गंधवानी तहसील के ग्राम बाड़ीपुरा में रास्ते में निकलने की बात को लेकर आरोपी ने की बुजुर्ग से मारपीट गंभीर घायल अवस्था में बड़वानी रेफर किया गया गंधवानी थाना क्षेत्र के अंतर्गत बाड़ीपुरा मे आरोपी सदु पिता जवरसिंह ने 65 वर्षीय बुजुर्ग से रास्ते से में निकलने की बात को लेकर मारपीट कर गंभीर घायल किया जिससे बुजुर्गों कई गंभीर चोट आई बीच-बचाव करने आए बुजुर्गों के पुत्र से भी मारपीट की गई गाली-गलौज कर जान से मारने की दी गई आरोपी के विरुद्ध धार जिले के अन्य थानों में भी अपराध पंजीबद्ध है आरोपी अपराधिक प्रवृत्ति का है बाद में दो अन्य लोगों ने बीच-बचाव किया व बुजुर्ग के पुत्र ने जैसे तैसे जान बचाकर अपने पिता को गंधवानी स्वास्थ्य केंद्र लाया वहां पर गंभीर घायल होने से प्राथमिक उपचार कर बड़वानी रेफर किया गया वहीं पुत्र ने थाने पर पहुंचकर रिपोर्ट दर्ज कराई।

1,000 से ऊपर से सभी बकयदारो के काटे जाएंगे विद्युत कनेक्शन

अतुल्य भास्कर, सागर

सागर शहर के ज्यादातर उपभोक्ता बिजली बिल जमा करने में रुचि नही दिखा रहे,सहायक अभियंता शुभम त्यागी ने बताया की सोमवार से 1000 से अधिक बकयदारों के कनेक्शन काटने की कार्यवाही की जाएंगी साथ ही काटे गए सभी कनेक्शन शाम में पुलिस को जानकारी देकर कनेक्शन की जांच की जाएंगी,और बिना बिजली बिल भरे लाइन चालू पाए जाने पर विद्युत अधिनियम 2003 की धारा 138 के तहत केस दर्ज किया जाएगा,सहायक अभियंता त्यागी ने बताया कि अभी तक सिर्फ 22 हजार उपभोक्ताओं ने ही बिजली बिल जमा किया है जिनमे से 1178 लाइन काटने और 4427 उवभोक्ताओ को फोन पर चेतावनी के बाद बिजली बिल जमा किया है, कार्यपालन अभियंता एस. के.सिन्हा ने बताया कि पिछले दो महीने से रेगुलर बिजली बिल भरने वाले उपभोक्ताओं की संख्या में कमी आयी और ये उपभोक्ता भी डिफाल्टर बनने की राह पर चल पड़े है जिससे कंपनी की आर्थिक स्तिथि बिगड़ रही है इसलये अब कठोर कदम उठाते हुए इन उपभोक्ताओं पर भी लाइन काटने की कार्यवाही की जाएंगी।

महीने भर बने 85 बिजली चोरी के केस बिजली चोरो में मचा हड़कंप: कार्यपालन अभियंता सिन्हा ने बताया कि इस महीने बिजली चोरी के कुल 85 चोरी के केस दर्ज हुए है जिनमे ज्यादातर केस बड़े बड़े मकानों के है जिनकी महीने भर में खपत 20 से 100 यूनिट आती थी और वास्तविक खपत 500 से 700 यूनिट आनी थी, इन सभी के पेनेल्टी 60 हजार से डेढ़ लाख तक कि जाएंगी

सुबह 6 बजे से चालू हुए बकयदारो के कनेक्शन काटने की कार्यवाही: कार्यपालन अभियंता सिन्हा श ने बताया कि रविबार से सुबह 6 से बिजली के कनेक्शन काटने की कार्यवाही की जाएंगी जिसके लिए टीमो ने रविवार को ही डिफॉल्टर्स उपभोक्ताओं के कनेक्शन को ट्रेस कर लिया है इस महीने तक 1000 रुपये से ऊपर के सभी कनेक्शन काटे जाएंगे।

कुर्मी समाज की बैठक का हुआ आयोजन

जैसीनगर। अनंत चतुर्दशी के पावन पर्व पर के पावन पर्व पर मंगल भवन ग्राम बाँसा मैं जैसीनगर ब्लॉक अखिल भारतीय कुर्मी छत्रिय महासभा की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें समाज में फैली व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का आह्वान किया गया बैठक में निर्णय लिया गया कि शिक्षा के क्षेत्र में कुर्मी समाज की बच्चे नई ऊंचाइयों को छुए, इसके लिए समाज के लोगों को प्रयास करना है। बैठक में शैलेन्द्र सचान जिला अध्यक्ष, दातार सिंह किटुआ गीता कुर्मी खुरई प्रहलाद पटेल बलबंत पुरा धीरज पटेल रत्नेश पटेल संतोष पटेल मनीष पटेल उमेश प्रमोद परासिया नरेश पटेल विपिन बाँसा रामसिंह बरोदिया विकास सोमला रमाकांत कृष्णकांत सुखदेव गोविंद डेलन सिंह महिंद पुरा एबं समाज के सभी वरिष्ट जन व युवा उपस्थित थे।

हटा सीईओ का भ्रष्टाचार को संरक्षण

खेत में पहले से खुदे तालाब पर ही खुद गया खेत तालाब

अतुल्य भास्कर, दमोह

पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग भले शासन ने ग्रामीणों का भला करने के लिये बनाया हो लेकिन इसमें कार्यरत अधिकारी कर्मचारी भ्टार्चार के दल दल में गले तक धंसे है। जिसके चलते करोड़ो खर्च करने के बाद भी न तो ग्रामीणों ग्रामीणों को रोजगार उपलब्ध हो रहा है और न ही गांवों का विकास हो रहा है । यहां तक कि पंचायतों में चल रहे भ्रष्टाचार की शिकायत जिम्मेदारों को करने के बाद भी न तो भ्रष्टाचार की जांच की जाती है औ? न ही भ्रष्टाचारियों पर कार्यवाही। हटा जनपद पंचायत में पदस्थ सीईओ द्वारा भी कुछ ऐसी ही कार्यप्रणाली अपनाई जा रही है। ग्राम पंचायतों में भ्रष्टाचार चरम पर है औ? जिम्मेदार इस भ्रष्टाचार की जांच करने कार्यवाही करने की जगह इसे संरक्षण प्रदान कर रहे हैं। दमोह जिले की हटा जनपद पंचायत के सीईओ द्वारा पंचायतों के भ्रष्टाचार को खुला संरक्षण प्रदान किया जा रहा है। बात चाहे फर्जी मस्टर रोल डालकर मजदूरी निकालने की हो या खेत में पहले से खुदे तालाब पर खेत तालाब के निर्माण की बात हो। हटा सीईओ सारे मामले गुपचुप तरीके से निपटने में यकीन करते है। ग्राम पंचायत हिनोता कला में पंचायत कर्मियों ने खेत में

पहले से खुदे तालाब को खेत तालाब बताकर लाखों रुपये की राशि आहरित कर ली। दरअसल हिनोता कला निवासी मंजू देवी पति लक्ष्मी गर्ग के खेत में गर्ग परिवार द्वारा स्वयं के व्यय पर दिनांक 31 अक्टूबर 2020 के पहले ही तालाब खुदवाया गया था जिसे बाद में पंचायत द्वारा फजीर्वाड़ा करते हुए खेत तालाब का नाम दिया गया। पंचायत ने वर्क आईडी 1711001054/आईएफ/220120346 14792 खेत तालाब निर्माण कार्य मंजू देवी/ लक्ष्मी गर्ग के नाम से तालाब खुदने के लगभग चार माह बाद फर्जी मस्टर डालना शुरू किए। ग्राम पंचायत ने पहला फर्जी मस्टर क्रमांक 16547 रुपये 58140 का दिनांक 20/12/2020 से 25/12/2020, 55 लोगों की मजदूरी का मस्टर डाला। जबकि मंजू देवी पति लक्ष्मी गर्ग के खेत में तालाब 31 अक्टूबर 2020 से पहले ही खुदकर तैयार हो चुका था। 31 अक्टूबर 2020 को मंजू देवी के खेत में बने तालाब में पानी भरा हुआ था। वर्क आईडी 1711001054/आईएफ/220120346 14792 खेत तालाब निर्माण कार्य मंजू देवी/ लक्ष्मी गर्ग में फजीर्वाड़े की सूचना सीईओ जनपद पंचायत हटा को 19 फरवरी 2021 को की गई। लेकिन सीईओ जनपद पंचायत हटा द्वारा फजीर्वाड़े की जांच करने की बजाए उक्त भ्रष्टाचार को अपना मौन समर्थन प्रदान किया गया जिसके परिणाम स्वरूप ग्राम पंचायत कर्मियों द्वारा फर्जी मस्टर क्रमांक 16713, 16930, 17058, 17264 औ? 18084 के माध्यम से लगभग सवा तीन लाख रुपये की मजदूरी का आहरण किया गया।

भ्रष्टाचार रोकने की जिम्मेदारी जिन जिम्मेदारों पर है वही आंख मूंद कर भ्रष्टाचार का समर्थन कर रहे है। मंजू देवी जैसे न जाने कितने ऐसे निर्माण कार्य होंगे जो या तो मशीनों से करवॉय गए या पहले से ही निर्मित है। लेकिन उन्हें नया बताकर लाखों रुपये का चूना मनरेगा योजना को लगाया गया है।

इनका कहना है: भ्रष्टाचार सम्बन्धी सभी शिकायतों की जांच की जाती है, यदि ऐसी कोई शिकायत प्राप्त होती है तो उसकी भी जांच कर दोषियों पर कार्यवाही की जाएगी।

- धनंजय सिंह भदौरिया
अपर सचिव, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, भोपाल

सर्व ब्राह्मण समाज कार्य समिति की बैठक का आयोजन

अतुल्य भास्कर, हटा। सर्व ब्राह्मण समाज कार्य समिति की बैठक का आयोजन रविवार को धर्मशाला में किया गया, जिसमें अध्यक्षता कन्हैयालाल गौतम के द्वारा की गई भगवान परशुराम जी के पूजन अर्चन के पश्चात बैठक के बिंदुओं को रखा गया। इसमें समाज सुधार की दिशा में उठाए जाने वाले कदमों पर चर्चा की गई यहां समाज की युवा पीढ़ी को नशे से दूर रहने और व्यापारिक गतिविधियों से जुड़ने पर जोर दिया गया जबकि पुनर्विवाह पर रोक जैसी कुप्रथा को समूल रूप से खत्म करने का प्रस्ताव भी रखा गया जिसे ध्वनि मत से पारित हुआ इस पर लक्ष्मी प्रसाद शास्त्री, आर पी पांडे, मथुरा पटेरिया, नरेंद्र दुबे, रामकुमार मिश्रा महिला मंडल से अंजना चौबे एवं रश्मि पांडे ने पुनर्विवाह के सन्दर्भ में अपनी बात रखी और समाज के लिए यह एक उचित कदम बताया है साथ ही इस निर्णय को समाज मे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने पर बल दिया गया इसी के साथ कोषाध्यक्ष डॉ मनोज तिवारी ने दो सालों के आय व्यय का लेखा जोखा देते हुए धर्मशाला जीर्णोद्धार के संबंध में जानकारी दी। समाज अध्यक्ष हरिराम पांडे ने कहा कि समाज को नशा मुक्त करने और रोजगार उन्मुख करने की नितांत आवश्यक है उन्होंने कहा कि हटा में चन्द्रशेखर आजाद की मूर्ति स्थापना पर लंबे समय से विचार चल रहा है जिसको जल्दी ही मूर्त रूप देने का प्रयास किया जा रहा है। प्रदेश स्तरीय सम्मेलन आयोजित कराने पर भी विचार व्यक्त किए गए। बैठक में प्रीतम पाठक, रामेश्वर नायक, मुन्ना शुक्ला,दया शंकर चौबे, अमिताभ चतुर्वेदी, जगमोहन पंडा, राम नजर मिश्रा, श्रीकांत स्वामी, जगदीश तिवारी, विनय शुक्ला, कमलेश गौतम, दिनेश मिश्रा, रजनीश तिवारी, मोनू तिवारी, श्याम गर्ग, श्रीराम कुरेरिया, बिट्टू पाठक, नमन चौबे, जिमी पंडा, रविकांत विदोलया नितिन पांडेय के अलावा कार्यकारिणी के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही है कार्यक्रम के अंत में सभी मंडल पदाधिकारियों को निर्वाचन उपरांत नियुक्ति पत्र देकर सम्मानित किया। संचालन युवा अध्यक्ष जितेन्द्र प्यासी के द्वारा किया गया।

प्रधानमंत्री के जन्मदिवस पर चलने वाले सेवा और समर्पण अभियान के अंतर्गत भाजपा आज दिव्यांगों को करेगी कृत्रिम अंग एवं उपकरण वितरित

अतुल्य भास्कर, होशंगाबाद। नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस पर भाजपा सेवा और समर्पण अभियान के तहत आज दिव्यांगों को कृत्रिम अंग एवं उपकरण वितरित किए जाएंगे। भाजपा जिलाध्यक्ष माधवदास अग्रवाल के मार्गदर्शन में कार्यक्रम के प्रभारी अनिल बुन्देला एवं सुनील राठौर ने बताया जिले के सात नगर एवं सात जनपद केन्द्रों पर आज नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में दिव्यांगों को कृत्रिम अंग एवं उपकरण वितरित किए जाएंगे कार्यक्रम हेतु मंडल प्रभारी बनाए है। होशंगाबाद नगर क्षेत्र में अखिलेश खण्डेलवाल, होशंगाबाद जनपद क्षेत्र में श्रीमती संगीता सोलंकी, सिवनीमालवा नगर क्षेत्र में देवीदयाल यादव, सिवनी मालवा जनपद क्षेत्र में राजेन्द्र पालीवाल, केसला जनपद क्षेत्र में प्रमेश मालवीय, इटारसी नगर क्षेत्र में जगदीश मालवीय, बाबई नगर क्षेत्र में ओम उपाध्याय, बाबई जनपद क्षेत्र में निखिलेश चतुर्वेदी, सोहागपुर नगर क्षेत्र में आकाश रघुवंशी, सोहागपुर जनपद क्षेत्र में जगदीश अहिरवार, पिपरिया नगर क्षेत्र में राजीव जायसवाल, पिपरिया जनपद क्षेत्र में श्रीमती अर्चना साहू, बनखेड़ी जनपद क्षेत्र में हेमराज मुख्त्यार, बनखेड़ी नगर क्षेत्र में संजय जैन बंटी प्रभारी बनाए है। जो जो दिव्यांग हितग्राहियों को अधिक से अधिक उपकरण दिलाए जा सके। वहीं सभी दिव्यांगों से आग्रह है कि संबंधित क्षेत्र के प्रभारियों से संपर्क कर माननीय प्रधानमंत्री के जन्मदिवस में चलने वाले इस अभियान में सहभागिता करें जिससे आपको उपकरण उपलब्ध कराए जा सके। दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए शासकीय योजना में ट्राई साइकिल प्रदान की जाती है कृपया पात्र विद्यार्थी संपर्क कर इस योजना का लाभ लें।

कई वर्षों से ग्राम ग्वारी के आदिवासी लोग रोड न होने से झेल रहे परेशानी

- **बीमार व्यक्ति को खाट पर लाना पड़ता है इलाज के लिए**
- **पहुंचते-पहुंचते रास्ते में ही तोड़ देते हैं दम**
- **ग्वारी वासियों ने कहा कि रोड नहीं तो वोट नहीं**
- **आने वाले समय में चुनाव का करेंगे बहिष्कार**

अतुल्य भास्कर, केसली

केसली विकासखंड की झिरिया ग्राम पंचायत के अंतर्गत आने वाले आदिवासी बाहुल्य ग्राम ग्वारी के लोग रोड ना होने से परेशानियों का सामना कर रहे हैं। चौका से ग्वारी तक का 4 किलोमीटर का रास्ता ग्वारी

के लोग जान जोखिम में डालकर तय करते हैं। बरसात के दिनों में यदि कोई व्यक्ति बीमार हो या महिलाओं की डिलीवरी होना हो तो एंबुलेंस वहां तक नहीं पहुंच पाती है।मरीज को खाट पर रखकर लाना पड़ता है ग्वारी वासी मुन्नालाल आदिवासी ग्राम पंचायत झरिया, हल्के वीर आदिवासी, हल्की रानी गौंड, साधना यादव का कहना है कि यदि चौका से ग्वारी के लिए रोड नहीं बनेगा तो हम सभी 5 गांव के लोग आने वाले समय में चुनाव का बहिष्कार करेंगे। आदिवासियों का कहना है कि देश के प्रधानमंत्री एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री कहते हैं कि गांव-गांव में सड़कें बन गई हैं लेकिन आजादी के बाद से आज भी झिरिया पंचायत के अंतर्गत आने वाले ग्राम ग्वारी के आदिवासी रोड से वंचित हैं उनको दलदल भरी कीचड़ में से निकलना पड़ता है। ग्वारीवासी आदिवासियों ने प्रशासन एवं जनप्रतिनिधियों से रोड बनाने की मांग की है। लोगों का कहना है कि यदि रोड नहीं बनेगा तो आने वाले समय में हम लोग चुनाव का बहिष्कार करेंगे एवं चौका स्कूल के सामने पुलिया क्षतिग्रस्त हो गई है जिस कारण से छात्रों को आने जाने में परेशानी उठानी पड़ रही है लोगों ने प्रशासन से पुलिया की भी मरम्मत कराने की मांग की है।

डॉ. मयंक तोमर होशंगाबाद जिले के बने मुख्य समन्वयक

अतुल्य भास्कर, होशंगाबाद। ह्यूमन राइट्स एंड सोसल जस्टिस मिशन मुंबई (मानवाधिकार एवं सामाजिक न्याय शिष्ट मंडल) द्वारा डॉ. मयंक तोमर

को होशंगाबाद जिले के मुख्य समन्वयक बनाया गया जिसमें उन्हें होशंगाबाद जिले जिम्मेदारी सौंपी और उनके उज्वल भविष्य की कामना की उनके मुख्य समन्वयक बनने पर परिवार जनों और प्रिय जनों ने शुभकामनाएं दी जिनमें मुख्य रूप से होशंगाबाद विधायक सीताशरण शर्मा, पीयूष शर्मा, मनोहर बढ़ानी, प्रकाश शिवहरे, कैप्टन करैया, मुकेश नागर, अखिलेश खंडेलवाल, शिव चौबे, हंस राय, केएन त्रिपाठी, अमित, अंकित, विशाल, आकाश, श्रीमती प्रेमलता जय सिंह तोमर, निर्मला राय, ममता शर्मा, सविता राजपूत, सुचित्रा यादव, मोनिका चौकसे, ललिता पुरवइया, दुर्गा, आरती, शामिल रहे।

अवैध मदिरा के खिलाफ आबकारी विभाग की बड़ी कार्यवाही

90000 हजार की अवैध मदिरा जप्त

होशंगाबाद। कलेक्टर नीरज कुमार सिंह के निर्देश पर जिला आबकारी अधिकारी अरविंद सागर के मार्गदर्शन में होशंगाबाद शहर के विभिन्न क्षेत्रों में अवैध मदिरा के विक्रय परिवहन एवं संग्रहण को रोकने हेतु 19 सितंबर रविवार को विशेष अभियान चलाया गया आबकारी दल की दो टीमें बनाकर संदिग्ध स्थानों पर छापामार कार्यवाही की गई।सर्वप्रथम ग्वालटोली क्षेत्र में आबकारी दल ने एक दो पहिया वाहन स्कूटी से परिवहन कर लाई जा रही थी आरोपी पर मध्य प्रदेश आबकारी अधिनियम की धारा 34 .1 का के तहत कार्यवाही कर प्रकरण पंजीबद्ध किया गया रॉयल स्टैग व्हिस्की की 12 बोतलों के साथ आरोपी को गिरफ्तार किया।

हाई स्कूल कैथोरा मे बच्चों के भविष्य से प्रभारी प्राचार्य कर रहे खिलवाड़

अतुल्य भास्कर, बटियागढ़

कोरोना से सिर्फ वर्ष बर्बाद हुए है लेकिन हाई स्कूल कैथोरा मे भविष्य बर्बाद करने की कोशिश पुरजोर तरीके से प्रभारी प्राचार्य और अधिकारियो की मिलीभगत से जारी है। हाई स्कूल कैथोरा मे एक नही दो प्राचार्य है एक प्राचार्य ऊर चौधरी जो कभी स्कूल नही आते तो दूसरे प्रभारी अर्जुन अहिरवार कभी समय से विद्यालय नही पहुचते और बिना स्वीकृत किए आवेदन रखकर विद्यालय से नदारत रहते है। सिलसिला सिर्फ यही तक सीमित नही है कुछ अतिथि शिक्षको को महीने मे तीन दिन आने पर पूरा वेतन और यदि ये अतिथि शिक्षक विद्यालय आ भी जाए तो सिर्फ हस्ताक्षर करने आते है और हस्ताक्षर करके चले जाते है। यदि प्रभारी या अधिकारियो को इस बारे मे बताया जाता है तो प्रभारियों द्वारा पक्ष लेकर कहा जाता है की आज गाड़ी नही थी तो कभी बीमार है। यैसा नही है की किसी अधिकारी को इसकी जानकारी नही है बल्कि इसकी जानकारी जिला तक है। पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी एचएन नेमा जी को बार बार अवगत कराया गया लेकिन कोई निरीक्षण करने नही आया न कोई कार्यवाही की गई। और तो और प्रभारी अर्जुन अहिरवार द्वारा हरिजन एक्ट मे फसाने की कई बार धमकी भी दी गई जिसकी शिकायत की गई थी और जाँच मे सही भी पाई गई थी लेकिन पैसा खेल यैसा था की कोई कार्यवाही नही की गई और पूरा विभाग इन्ही के पक्ष मे आ गया।

हवन पूजन कर किया भगवान श्रीगणेश जी का विसर्जन

अतुल्य भास्कर, केसली। केसली में शासकीय गाइडलाइन के अनुसार गणेश विसर्जन किया। थाना प्रभारी केसली मकसूद अली अपने अमले के साथ विसर्जन के लिए चयनित घाट पर मौजूद रहे। लाइफ जैकेट सहित लाइफगार्ड विसर्जन घाट पर मौजूद रहे। शासकीय गाइडलाइन के अनुसार शाम 6:00 बजे से पहले गणेश विसर्जन किया गया। गणेश विसर्जन में एक मूर्ति के साथ 10 लोग ही शामिल रहे एवं शांतिपूर्ण तरीके से हवन पूजन कर भगवान गणेश का विसर्जन किया गया।

डेंगू रोग की रोकथाम हेतु केसली पंचायत कर्मियों द्वारा किया दवाई का छिड़काव

केसली में डेंगू के मरीजों की बढ़ती संख्या से सागर कलेक्टर दीपक आर्य एवं एसडीएम अमन मिश्रा को कराया गया था अवगत

अतुल्य भास्कर, केसली

केसली में डेंगू के मरीजों की बढ़ती संख्या से सागर कलेक्टर दीपक आर्य एवं एसडीएम अमन मिश्रा को अवगत कराया गया था। उच्च अधिकारियों ने सजगता के साथ ग्राम पंचायत को दवाई छिड़काव के लिए आदेशिंत किया। डेंगू रोग की रोकथाम हेतु ग्राम पंचायत केसली के द्वारा नालियों से लेकर ऐसी जगह पर दवाई का छिड़काव किया जा रहा है जिस जगह पर पानी एकत्रित होता है डेंगू रोग धीरे-धीरे मध्यप्रदेश में अपने पैर पसार रहा है एवं केसली में भी दिन प्रतिदिन डेंगू के मरीज बढ़ रहे हैं इसी को देखते हुए केसली पंचायत के कर्मचारियों द्वारा डेंगू रोग की रोकथाम के लिए दवाई का छिड़काव किया गया सहायक सचिव अनामिका जैन ने बताया कि डेंगू रोग की रोकथाम हेतु एवं हमारे नगर वासियों को डेंगू रोग से बचाने के लिए दवाई का छिड़काव लगातार जारी रहेगा अभी दवाई का छिड़काव वार्ड नंबर 14, 15, 16, में किया गया है रोग की रोकथाम हेतु दवाई का छिड़काव केसली नगर के समस्त वार्डों में जारी रहेगा।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना 2.0 का शुभारंभ

20 महिलाओं को निःशुल्क गैस कनेक्शन देकर हुआ योजना का शुभारंभ

अतुल्य भास्कर, बटियागढ़

बटियागढ़ में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का शुभारंभ रामराजा भारत गैस एजेंसी बटियागढ़ में आज शनिवार दोपहर 2.30 बजे प्रधानमंत्री उज्ज्वला निःशुल्क गैस कनेक्शन का वितरण किया गया। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना 2.0 के तहत शनिवार को गैस कनेक्शन वितरण कार्यक्रम हुआ। इस दौरान भाजपा पूर्व जिला अध्यक्ष नरेन्द्र व्यास ने मोदी सरकार की उपलब्धियां गिनाईं। उन्होंने कहा कि समाज के अंतिम पायदान पर खड़े लोगों तक जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचना ही मोदी सरकार की प्राथमिकता है। इस दौरान उन्होंने 20 महिलाओं को गैस चूल्हा और सिलेंडर देकर योजना का आगाज किया।

श्री रामराजा भारत गैस एजेंसी के सामने आयोजित कार्यक्रम में भाजपा मंडल अध्यक्ष कपिल शुक्ला ने कहा कि भाजपा का नारा सबका साथ, सबका विकास है। इसी के तहत सरकार काम कर रही है। देश में करीब 10 करोड़ लोगों के पास न तो सिर छिपाने के लिए छत थी और न ही गैस और बिजली कनेक्शन। गांवों में लोगों के पास शौचालय तक नहीं थे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष पं. नरेंद्र व्यास, मंडल अध्यक्ष कपिल शुक्ला, एमएच क्लब के अध्यक्ष पं.आनंद त्रिवेदी , जितेंद बटियागढ़ मुख्य कार्यपालन अधिकारी आरके चौबे जनपद पंचायत अध्यक्ष भगत पटेल रामराजा भारत गैस एजेंसी के संचालक महेन्द्र राय जितेंद ठाकुर मुकेश पटेल सहित गणमान्य नागरिक की उपस्थिति में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के अंतर्गत निःशुल्क गैस कनेक्शन का वितरण किया गया गैस चूल्हा और सिलिंडर पाकर खिल उठे महिलाओं के चेहरे।

सांसद, मंत्री के आश्वासन के बाद भी नहीं बन पाया श्मशान घाट, स्थिति दयनीय

अतुल्य भास्कर, जैसीनगर

जैसीनगर जनपद क्षेत्र की मुख्यालय की ग्राम पंचायत जैसीनगर पंचायत के श्मशान घाटो के हाल बेहाल है बिजली आफिस स्थित श्मशान घाट की जो हालत है उसे देखकर आप यह नही कह सकते कि यह क्षेत्र प्रदेश के राजस्व एंव परिवहन मंत्री का क्षेत्र है श्मसान घाट की हालत अति दयनीय हो चुकी है जगह-जगह खरपतवार तीन-तीन फुट उग आई है जगह-जगह कीचड़ मची हुई है, कचरे के ढेर लगे हुये है स्कूल में भी ग्राम वासियों ने श्मशान घाट की हालत को लेकर जनपद पंचायत सीईओ राहुल पांडे को ज्ञापन सौंपा था लेकिन ग्राम पंचायत को जू तक नहीं रेंगी जबकि इस ग्राम पंचायत सचिव आसाराम साहू को स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं मंत्री प्रतिनिधि का फुल लोडेड आशीर्वाद प्राप्त है,और कई दफा क्षेत्र के नेता भव्य श्मशान घाट बनवाने का दावा कर चुके है लेकिन बन कभी नहीं पाता स्थानीय ग्रामवासी कहने लगे हैं कि प्रशासन इस श्मशान घाट को हम लोगों को सौंप दे दो हम सभी जन सहयोग से काम करवा लेंगे अब देखने वाली बात है कि अखबार में समाचार लगने के बाद क्या नेता या स्थानीय जनप्रतिनिधि श्मशान घाट को बनवा पाएंगे।

तालिबान के निशाने पर महिलाएं

अफगानिस्तान में तालिबान के राज का असर बांग्लादेश तक में देखा जा रहा है। तमाल भट्टाचार्य नाम के एक बंगाली बाबू अफगानिस्तान के एक स्कूल में पढ़ाते थे। वतन वापसी के समय तालिबान से उनका आमना-सामना हुआ। तालिबान के कथित मधुर व्यवहार से मुग्ध होकर अब वह उन्हीं के गुण गा रहे हैं। तालिबान के लड़ाके चुनाव जीतकर नहीं, बल्कि बंदूक की नली से सत्ता में आए हैं।

अब ये लड़ाके वहां 1,400 साल पुराना शरिया कानून लागू करेंगे। शरिया कानून के तहत किस तरह पत्थर मारकर लड़कियों की हत्या की जाती है, औरतों को बुर्के के अंधेरे में कैद किया जाता है, लड़कियों की पढ़ाई और रोजगार का रास्ता बंद किया जाता है, उस बंगाली बाबू को निश्चित तौर पर इन सबके बारे में पता होगा। फिर वह किस आधार पर कह रहे थे कि बीती सदी के नौवें दशक के तालिबान और आज के तालिबान में फर्क है? तालिबान के रवैये में वह फर्क देख रहे हैं, पर जिस शरिया कानून के जरिये वे सरकार चलाएंगे, वह कानून तो नहीं बदला है। अफगानिस्तान की जेलों से लड़ाकों को रिहा किया गया है। तालिबान की नई सरकार में इन लड़ाकों की बड़ी भूमिका है। तालिबान की ताकत देखकर अनेक देशों के लड़ाके तालिबान की तरह सत्ता पाने के सपने देख रहे हैं। मैंने सुना है कि बांग्लादेश में अनेक लोग तालिबान द्वारा सत्ता दखल करने पर खुशियां मना रहे हैं। इनमें से अनेक लोग ऐसे हैं, जो अफगानिस्तान जाकर तालिबान से सैन्य प्रशिक्षण लेकर आए हैं। मेरा मानना है कि अब और भी अधिक संख्या में बांग्लादेशी अफगानिस्तान जाएंगे, ताकि लौटकर वे बांग्लादेश को तालिबान राज जैसा बना सकें। बांग्लादेश की सरकार अगर अब भी सतर्क न हुई, तो आने वाले दिन खतरनाक होने वाले हैं। सत्ता दखल करने के बाद ही तालिबान ने साफ कह दिया था कि लड़कियों को नौकरी करने की जरूरत नहीं है। उन्हें घर से बाहर निकलने की भी जरूरत नहीं है। घर से निकलते समय उनके साथ पुरुष अभिभावक का होना जरूरी है। तीस पार की एक अफगान महिला ने बताया कि खाने की कोई चीज बाजार से खरीद कर लाने के लिए उसे चार साल के अपने बेटे को साथ ले जाना पड़ा। उस दिन चार साल का वह अभिभावक अगर साथ न होता, तो अकेले बाहर निकलने के जुर्म में उस महिला को चाबुक की मार खानी पड़ती। वहां लड़कियों की कम उम्र में शादी करा देने के लिए भी तालिबान दबाव बना रहे हैं। यह एलान करवाया जा रहा है कि अट्ठारह से अधिक उम्र की कोई लड़की कुंवारी न रहे। अट्ठारह से कम उम्र में शादी करा देने का मतलब है लड़कियों के जीवन से जुड़ी तमाम संभावनाओं का गला घोंट देना। अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे से जहां लोग नाराज और चिंतित हैं, वहीं इस घटनाक्रम से खुश होने वालों की संख्या भी कम नहीं है। भारत में भी अनेक मुसलमान काबुल पर तालिबान के कब्जे से खुश हैं। लेकिन विरोधाभास देखिए कि यही लोग भारत में हिंदूवादी कट्टरता का तीखा विरोध करते हैं। ये चाहते हैं कि भारत गणतंत्र बना रहे, इसका धर्मनिरपेक्ष स्वरूप कायम रहे। लेकिन मुस्लिम देशों को लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष होना चाहिए या नहीं, इस बारे में उनकी कोई अपेक्षा नहीं है। ये गैरमुस्लिम देशों में आधुनिकता की उम्मीद करते हैं, लेकिन चाहते हैं कि मुस्लिम देश शरिया कानूनों से चलें। आचरण के इस दोहरेपन पर इन्हें शर्म भी नहीं आती।

संपादकीय

कोहली की 'विराट' कप्तानी और धोनी

भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान विराट कोहली ने टी-20 वर्ल्ड कप से पहले टी-20 की कप्तानी से संन्यास की घोषणा कर दी। इस खबर ने सभी क्रिकेट प्रेमियों को सकते में ला दिया। उन्होंने अपनी कप्तानी को लेकर उठ रहीं उन सारी अटकलों पर गुरुवार को उस वक्त विराम लगा दिया, जब ट्वीटर के माध्यम से जानकारी दी कि वो टी-20 वर्ल्ड कप के बाद टी-20 की कप्तानी छोड़ देंगे। विराट क्रिकेट की दुनिया का एक ऐसे नाम है जिनके बारे में लिखकर बताने की जरूरत नहीं है। विराट ने अगर अपने गुस्से से एक अलग पहचान बनाई तो, कुछ खिलाड़ियों का सम्मान करके भी एक अलग जगह बनाई। टी-20 की कप्तानी से विराट कोहली के संन्यास ने एक बार फिर से कैप्टन कूल कहे जाने वाले महेंद्र सिंह धोनी की क्रिकेट से विदाई की याद दिला दी। धोनी ने 2017 में अपने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट करियर को अलविदा कह दिया था। उस समय का विराट का बयान आज भी लोगों के जहन में बना हुआ है। विराट ने कहा था- भले ही धोनी क्रिकेट और कप्तानी से अलविदा कह दिया हो लेकिन वो हमेशा उनके कप्तान रहेंगे। आज धोनी के बाद क्या इस वाक्य को दोहराने वाला कोई दूसरा है। जो विराट के लिए यह बात कहे, क्योंकि आंकड़ों की बात करें तो कैप्टन कूल ने 72 टी20 मैचों में टीम की कमान संभाली और 41 में जीत दिलाई। इसके साथ ही 28 में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। वहीं कोहली ने 45 मैचों में कप्तानी की और 27 में जीत दर्ज की। इन दोनों की तुलना आंकड़ों से की जाए तो कोहली आगे निकल जाएंगे, लेकिन दर्शकों के जहन में छाप छोड़ने वाली बात की जाए तो इसकी तुलना थोड़ी मुश्किल हो सकती है। जब विराट ने धोनी से अपने रिश्तों के बारे में दो शब्दों में बताया जब तक विराट और धोनी साथ खेले और उसके बाद भी, खेल प्रशंसकों के लिए धोनी और विराट के रिश्तों के बारे में जानना हमेशा उत्साहित करता रहा है। कई बार धोनी से और कई बार विराट से, इस संबध में उनके प्रशंसकों ने सवाल भी किए। दोनों ही खिलाड़ियों ने कई बार अपने विचार रखे और कई बार बहुत ही कम शब्दों में इसे बता दिया। एक बार जब विराट से धोनी के उनके रिश्ते के बारे में पूछा गया था तो उनका कहना था कि विश्वास और सम्मान। दोनों खिलाड़ियों की शैली और सोच में काफी फर्क है। दोनों ने क्रिकेट की बुलंदियों को देखा है। इनकी तुलना करना मुश्किल है। लेकिन क्या अब हर खिलाड़ी अपनी अलग पहचान बनाने में लग गया है।

अफगानिस्तान के बहाने पाक को नसीहत

शंघाई सहयोग संगठन के 21वें शिखर सम्मेलन में अफगानिस्तान के हालात के प्रसंगवश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चेताया कि कट्टरपंथ क्षेत्रीय शांति के लिये बड़ा खतरा उत्पन्न कर रहा है, जिसके लिये एससीओ देशों को मिलकर प्रयास करने चाहिए। ताजिकिस्तान की राजधानी दुशांबे में आयोजित सम्मेलन में पाक प्रधानमंत्री की उपस्थिति में मोदी ने चेताया कि कट्टरपंथ के चलते युवाओं को तकनीकी विकास का लाभ नहीं मिल पा रहा है और क्षेत्र के आर्थिक संसाधनों का दोहन नहीं हो पा रहा है। दरअसल, ताजिकिस्तान के राष्ट्रपति इमोमाली रहमान की अध्यक्षता में हाइब्रिड प्रारूप के शिखर सम्मेलन में रूस, चीन व पाक समेत आठ देश भाग ले रहे हैं। हाइब्रिड इस मायने में कि आयोजन का कुछ हिस्सा डिजिटल आधार पर तथा शेष हिस्सा आमंत्रित सदस्यों की उपस्थिति के रूप में आयोजित किया जा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने वर्चुअली सम्मेलन को सम्बोधित किया, वहीं विदेश मंत्री जयशंकर सम्मेलन में भाग लेने दुशांबे में मौजूद हैं जहां उन्होंने सीमा अतिक्रमण के मुद्दे पर चीनी समकक्ष से बातचीत की। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के सामान्य रिश्तों का रास्ता सीमा पर शांति से होकर गुजरता है। प्रधानमंत्री ने अफगानिस्तान की चुनौती को मिलकर निपटने की बात करते हुए कहा कि मध्य एशिया में इस्लाम से जुड़ी शांति, सहिष्णु और समावेशी संस्थाओं की बड़ी भूमिका रही है। उन्होंने इस सम्मेलन के जरिये दुनिया को इस्लामिक कट्टरपंथ की चुनौतियों के प्रति आगाह किया। मोदी ने माना कि अफगानिस्तान में कट्टरपंथियों की सत्ता आने से क्षेत्र में अस्थिरता का खतरा पैदा हो गया है। प्रतीकों के जरिये प्रधानमंत्री ने पाक को चेताया कि देर-सवेर कट्टरपंथ उसके लिये खतरा बन सकता है। लोकतांत्रिक सरकार के दौरान जो आतंकी संगठन नियंत्रण में थे, अब तालिबान के सत्ता में आने के बाद वे स्वच्छंद व्यवहार करने लगे हैं। उन्होंने चेताया कि यह पूरा क्षेत्र कट्टरपंथी ताकतों के लिये सुरक्षित ठिकाना बन सकता है।

दरअसल, सबसे बड़ी चिंता यह है कि अफगानिस्तान में कट्टरपंथियों की वापसी के बाद अन्य इस्लामिक देशों में भी सख्त शरिया कानून लागू करने की मांग जोर पकड़ने लगी है। पाकिस्तान में भी वहाबी इस्लाम का खतरा बढ़ सकता है। यही वजह है कि मोदी ने कहा कि मध्य एशिया के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो यह उदार व प्रगतिशील मूल्यों का गढ़ रहा है। यहां सूफीवाद की उदारवादी परंपराएं सदियों तक पनपी व पूरे विश्व में इनका विस्तार हुआ, जिसकी झलक आज भी इन देशों की सांस्कृतिक विरासत में देखने को मिलती है। भारत समेत एससीओ के इन देशों में इस्लाम से जुड़ी उदारवादी, सहिष्णु और समावेशी संस्थाएं व परंपराएं मौजूद हैं। इन हालात में एससीओ को कट्टरपंथ और आतंकवाद से लड़ने का एक साझा दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए। उन्होंने कट्टरपंथ से मुकाबले के लिये क्षेत्रीय सुरक्षा व परस्पर विश्वास की आवश्यकता पर भी बल दिया, जिसे उन्होंने नयी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य के लिये अनिवार्य शर्त भी माना। प्रधानमंत्री ने कहा कि विकसित देशों से मुकाबले के लिये इस क्षेत्र को नयी टेक्नोलॉजी में भागीदारी निभानी होगी। इसके लिये जरूरी है कि हम विज्ञान व तर्कवादी सोच को प्रश्रय दें। दरअसल, कट्टरपंथ के चलते हम इस क्षेत्र में विस्तृत आर्थिक संभावनाओं का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। इसके लिये सदस्य देशों के बीच बेहतर कनेक्टिविटी की जरूरत है। अतीत में मध्य एशिया के देशों के बीच क्षेत्रीय बाजारों में कनेक्टिविटी पुल की बड़ी भूमिका रही है। इस क्षेत्र में समृद्धि की बयार फिर से संभव है। भारत इस दिशा में संबंध बढ़ाने के लिये उत्सुक है। इस बाबत उन्होंने ईरान के चाबहार पोर्ट में भारतीय निवेश का उदाहरण दिया और इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ कोरिडोर की वास्तविकता बतायी। उन्होंने कहा कि कनेक्टिविटी एकतरफा नहीं हो सकती और इसके लिये भरोसे, भागीदारी व पारदर्शिता की जरूरत है। साथ ही क्षेत्र के देशों की संप्रभुता का भी सम्मान किया जाना चाहिए। कहीं न कहीं प्रधानमंत्री चीन के महत्वाकांक्षी सीपीईसी प्रोजेक्ट और इससे जुड़ी विसंगतियों की ओर इशारा कर रहे थे जो पाक अधिकृत कश्मीर से होकर गुजरता है। मोदी ने कहा कि मेरा मानना है इस क्षेत्र में सबसे बड़ी चुनौतियां शांति, सुरक्षा और भरोसे की कमी से संबंधित हैं और इन समस्याओं का मूल कारण बढ़ता हुआ कट्टरपंथ है। अफगानिस्तान में हाल के घटनाक्रम ने इस चुनौती को और स्पष्ट कर दिया है। अफगानिस्तान में तालिबान की सरकार को स्थापित करने में पाकिस्तान ने जिस तरह की भूमिका निभाई है, वह सभी को पता है। पाकिस्तानी एयरफोर्स ने शेरों का गढ़ कहे जाने वाले पंजशीर में बमबारी की है। आईएसआई चीफ काबुल पहुंचे तो लगा कि तालिबान-पाकिस्तान में गजब की केमिस्ट्री चल रही है। कुछ हद तक ऐसा है भी, पर तालिबान राज से पाकिस्तान को इतना भी फायदा नहीं होने वाला, जितना वे उछल रहे हैं। अमेरिका ने दो हफ्ते के भीतर ही संकेत दे दिए हैं। अफगानिस्तान से भले ही अमेरिका ने अपने सैनिक बुला लिए हों, पर वह इस क्षेत्र को हमेशा के लिए भूलने वाला नहीं है। कभी आतंकवाद के खिलाफ जंग के नाम पर पाकिस्तान को अरबों रुपए देने वाले अमेरिका ने अफगानिस्तान से निकलते ही साफ कह दिया है कि वह पिछले बीस साल के दौरान पाकिस्तान की भूमिका की जांच करेगा। विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन की यह टिप्पणी पाकिस्तान के डबल गेम की तरफ सीधा इशारा है। एक तरफ वह आतंकियों को आश्रय देता है और दूसरी तरफ आतंकियों के खिलाफ ऑपरेशन के नाम पर अपना खजाना भी भरता है। अमेरिका के सांसद तक कह रहे हैं कि पाकिस्तान की तालिबान को मजबूत करने में भूमिका, पाक सरकार में शामिल कट्टरपंथियों की जीत है। अफगानिस्तान में जो हालात हैं और पाकिस्तान वहां जो भूमिका निभा रहा है, वह भारत के लिए अच्छा संदेश नहीं है। अफगापिस्तान में तालिबान को स्थापित करने के बाद पाकिस्तान अपना मतलब साधने जिस तरह उसका इस्तेमाल करेगा, वह ज्यादा चिंता पैदा करने वाला है। इसीलिए अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पाकिस्तान को लताड़ लगाते हुए पूरी दुनिया को कट्टरपंथ के प्रति आगाह किया है। आतंक के खिलाफ जंग में भारत लंबे समय से दुनिया का साथ मांग रहा है। कई देशों ने भारत के साथ मिलकर जंग को आगे बढ़ाया भी है, मगर पाक और चीन जैसे देश अपने हित के लिए जिस तरह से कट्टरपंथ को बढ़ावा दे रहे हैं, वह बड़े खतरे की तरफ इशारा कर रहा है। मोदी की स्पीच में जिन बिंदुओं पर चिंता जताई गई है, उसे सभी देशों को गंभीरता से लेना होगा। अफगानिस्तान में तालिबान की वापसी सिर्फ भारत के लिए ही नहीं पूरी दुनिया के लिए आतंकवाद के फिर से पनपने का ठोस प्रमाण है।

उत्तराखंड में बार-बार डोल रही है धरती

उत्तराखंड में एक बार फिर भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं।11 सितंबर को जोशीमठ से 31 किलोमीटर पश्चिम दक्षिण पश्चिम में सुबह 5ः58 बजे भूकंप के झटके महसूस किए गए। इस भूकंप की रिक्टर स्केल पर तीव्रता 4.6 रही। उत्तराखंड में इस भूकंप का प्रभाव चमोली, पौड़ी, अल?मोड़ा आदि जिलों में रहा ,जहां भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। भूकंप के झटकों से लोगों में दहशत फैल गई और लोग अपने घरों से बाहर निकल आए।इससे पूर्व 24 जुलाई को उत्तरकाशी से 23 किलोमीटर दूर करीब 1 बजकर 28 मिनट पर भूकंप आया था। इस भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 3.4 मापी गई थी। जिला मुख्यालय उत्तरकाशी के साथ डुंडा, मनेरी, मानपुर, चिन्यालीसौड़, बड़कोट, पुरोला व मोरी से भी भूकंप के झटके महसूस होने की जानकारी मिली थी। हरिद्वार जिले में गत वर्ष एक दिसम्बर को नौ बजकर 42 मिनट पर भूकंप के झटके महसूस किए गए थे। रिक्टर पैमाने पर इसकी तीव्रता 3.9 मैग्नीट्यड मापी गई थी, जिसकी गहराई लगभग 10 किलोमीटर तक थी।इस भूकंप से कोई क्षति तो नही हुई थी।लेकिन यह भूकंप भविष्य में किसी बड़े

भूकंप का संकेत अवश्य माना गया था।उत्तराखंड भूकंप के दृष्टि से अति संवेदनशील क्षेत्र है। यहां एक साल में कई बार भूकंप के झटके महसूस किए गए जाते हैं। 25 अगस्त 2020 को भी उत्तरकाशी में भूकंप आया था। उस समय भूकंप का केंद्र टिहरी गढ़वाल था। रिक्टर पैमाने पर उसकी तीव्रता 3.4 मापी गई थी। इससे पहले को चमोली और रुद्रप्रयाग जिलों में 21 अप्रैल को भूकंप के झटके महसूस हुए थे। जिसका केंद्र चमोली जिले में था, रिक्टर पैमाने पर उस भूकंप की तीव्रता 3.3 थी। भूकंप के इन झटको ने लोगो के मन में बेचैनी बढ़ा दी है।देवभूमि उत्तराखंड से लेकर गुजरात तक भूकंप का खतरा लगातार बना हुआ है। गत 14 जून की शाम गुजरात के भचाऊ,राजकोट, अहमदाबाद में 5.5 तीव्रता के भूकंप ने सबकी नींद उड़ा दी थी।सन 2015 में नेपाल केन्द्रित भंयकर भूकम्प के कारण नेपाल और उत्तर भारत में ढाई हजार से अधिक मौते भूकंप से हो गई थी और अरबो रूपये की सम्पत्ति नष्ट हो गई थी। सबसे अधिक क्षति नेपाल और नेपाल से सटे बिहार में हुई थी। उस समय सात दशमलव नौ रियेक्टर पैमाने के अधिक तीव्रता के भूकम्प से जो कि हिरोशिमा बम विस्फोट से पांच सौ चार गुना ताकतवर था,से उत्तराखण्ड में भी दहशत फैल गई थी।हिरोशिमा बम विस्फोट से साढे बारह किलोटन आफ टीएनटी एनर्जी रिलीज हुई थी जबकि इस भंयकर भूकम्प से उनास्सी लाख टन आफ टीएनटी एनर्जी रिलीज हुई है जिससे नेपाल और विहार,उत्तर प्रदेश के साथ साथ कई राज्यों में भारी नुकसान हुआ था। उत्तराखण्ड में भी उस समय कई जगह भूकम्प के झटके महसूस किये गए थे। लेकिन उत्तराखंड में भूकम्प से अधिक नुकसान नही हुआ था,लेकिन इससे पूर्व उत्तराखंड भूकंप की भयंकर त्रासदी झेल चुका है। उत्तरकाशी, पिथौरागढ़,अल्मोड़ा, द्वारहाट, चमोली जिले भूकंप के निशाने पर है।

उत्तम आकिन्चन्य, ममता दुख की खान

बाहर के पत्थर फेंकने से काम नहीं चलेगा, बाहर के बोझ के साथ साथ भीतरी बोझ भी उतारना जरूरी है। जब तक चित्त पर काम, क्रोध, लोभ और मोह के पत्थरों का बोझ है, तब तक चेतना का ऊर्ध्वारोहण संभव नहीं है। चेतना के ऊर्ध्वारोहण के लिये बाहर और भीतर से हल्का होना जरूरी है इसी हल्केपन का नाम है- आकिन्चन्य । न किन्चनम् अकिनचनम् भावत आकिन्चन्यम् । मेरा कुछ भी नहीं है। इस प्रतीति का नाम आकिन्चन्य है।

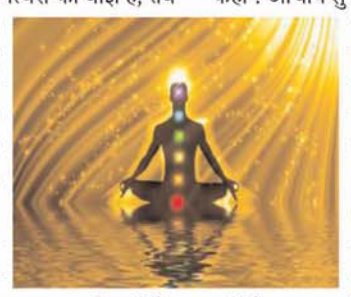

आकिन्चन्य धर्म का स्वरूप निर्दिष्ट करते हुए आचार्य अकलंक देव ने लिखा है अध्यात्म की साधना के लिये ममत्व का त्याग अनिवार्य है। क्योंकि ममता ही दुख की खान है। हमारे मन में पलने वाली ममता हमे बहिर्मुखी बनाती हैं वहिर्मुखता दुख का मूल कारण है। वह जीव ममता के कारण बॅधता है। और ममता को जीतने से मुक्त होता है अत: सर्वप्रथम हमे निर्ममत्व होने का प्रयत्न करना चाहिये । जिस दिन यह बोध जग जायेगा कि जहाँ जी रहा हूँ वह मेरा नहीं है, जिनके बीच जी रहा हूँ वे मेरे नहीं हैं। उसी क्षण आकिन्चन्य की प्रतीति हो जायेगी। शरीर के साथ-साथ मनुष्य को सम्पत्ति के प्रति भी बड़ा प्रबल मोह होता है सम्पत्ति शाश्वत नहीं है। जिस सम्पत्ति के पीछे मनुष्य स्वयं को विपत्ति में डालता है, रात-दिन जिसकी चिन्ता में अनुरक्त रहता है, वास्तव में वह उसकी है ही कहाँ ? आचार्य शुभचन्द्र कहते हैं मैं आकिन्चन्य हूँ यह प्रतीति कर लो, तीन लोक के अधिपति बन जाओगे । सच में जीवन धन से बडा कोई धन नही है। जगत में सबसे मूल्यवान जीवन है। जीवन के रहते ही जगत के पदार्थो का मूल्य है। जीवन के विनष्ट हो जाने के बाद उनका क्या मूल्य है? जो अपनी आत्मनिधि को जान लेता है, जगत के जड वैभव से उसे लगाव नही रहता ।

एकत्व भावना में कहा है संसार के सारे संबंध स्वार्थ पर टिके हैं। यथार्थ में कोई किसी का नही है। एकत्व की प्रतीति ही आकिन्चन्यता की उपलब्धि है। वस्तुत: संसार में कोई किसी का नहीं है। संसार का हर व्यक्ति अकेला है। यहाँ की हर वस्तु और हर व्यक्ति अनाथ है कोई किसी का नाथ और साथ नहीं है। कोई चाहे भी तो किसी का साथ नही है। कोई चाहे भी तो किसी का साथ नहीं दे सकता । कोई व्यक्ति कितना भी आत्मीय क्यों न हो, यदि उसके सिर में दर्द हो तो वह उसके दर्द के प्रति सहानुभूति तो प्रकट कर सकता है, पर उसके दर्द को बॉट नहीं सकता । संसार के प्रत्येक प्राणी को अपने-अपने कर्मो के अनुसार सुख-दुख भोगना पड़ता है।

झाझड़िया के जज्बे से सोने-चांदी की झंकार

अक्सर हम देश की प्रतिभाओं को पहचान देने में बहुत देर कर देते हैं। जब देश के लोग टोक्यो ओलंपिक में भाला फेंक में सोने का पदक लाने वाले नीरज चोपड़ा का पलक-पांवड़े बिछाकर स्वागत कर रहे थे, तब दो बार पैरालंपिक में सोने का पदक जीतने वाले देवेंद्र झाझड़िया के बारे में बहुत कम लोगों को पता था। तब तीसरे पदक के लिये तैयारी कर रहे देवेंद्र झाझड़िया की तरफ बहुत कम लोगों का ध्यान गया। देवेंद्र ने उस वक्त देश के लिये पैरालंपिक में सोने का पदक जीता, जब देश में पैरा खेलों की चर्चा भी नहीं होती थी। तब खेलों की सुविधाएं भी नहीं थी और सरकारी मदद भी नहीं। पैरा एथलीटों को बुनियादी सुविधाएं नहीं मिलती थी। जब देवेंद्र ने देश के लिये पहला स्वर्ण पदक जीता तो पता नहीं था कि फिजियो व फिटनेस ट्रेनर क्या होता है। वर्ष 2004 में जब वह एथेंस के पैरालंपिक में भाग लेने जा रहा था तो खर्चे का जुगाड़ पिताजी ने किया। वे ही उसे हवाई अड्डे छोड़ने आये थे। तब पिता ने कहा था कि तुम कामयाबी हासिल करो तब ही सरकारें और संस्थाएं तुम्हारी प्रतिभा को पहचान देंगी। आज पिता नहीं हैं लेकिन पिता

की बातें उसे सच होती दिख रही हैं। सरकारें अब पैरा खिलाड़ियों पर ध्यान दे रही हैं और ईनाम भी बरस रहे हैं। हालांकि, सामान्य ओलंपिक और पैरालंपिक का भेद कुछ हद तक नजरों में कायम है। बहरहाल, जब हम नीरज चोपड़ा व देवेंद्र झाझड़िया की उपलब्धि की बात करते हैं तो याद रखना चाहिए कि देवेंद्र ने ये उपलब्धियां एक हाथ से हासिल की हैं। दरअसल, देवेंद्र जब 1981 में झाझड़ियों की ढाणी में एक जाट परिवार में जन्मे तो वह एक सामान्य बालक ही थे। आर्थिक तंगी थी लेकिन वह एक स्वस्थ बालक के रूप में आए। आठ वर्ष की अवस्था में बच्चों के साथ लुका-छिपी खेलते वक्त एक पेड़ में जा छिपे और ग्यारह हजार वोल्ट वाली तार की चपेट में आकर बुरी तरह झुलस गये। हालात देखकर घर वाले डर गये थे कि क्या वह सुबह का सूरज देख पायेगा। डाक्टरों ने उनकी जान बचाने के लिये उनका एक हाथ काट दिया। उसके बाद उसकी आंखों के सामने अंधेरा-सा छा गया कि जीवन कैसे चलेगा। जीवन से विरक्ति होने लगी। लेकिन पिता राम सिंह ने संबल दिया। धीरे-धीरे देवेंद्र बड़ा हुआ। खेलों में रुचि जगी। वह सामान्य लड़कों के साथ फुटबाल खेलता। पिता राम सिंह ने सलाह दी कि एकल खेल खेलो, जिसमें तुम्हारी प्रतिभा को पहचान मिलेगी। फिर उसने भाला फेंकने का अभ्यास किया। वह रेत के धोरों के बीच भाला फेंकने का अभ्यास करता। परिवार की स्थिति महंगा भाला दिलाने की नहीं थी। पहले खेत के सरकंडे तोड़कर उन्हें भाले की तरह फेंकने का अभ्यास किया। फिर खेजड़ी के पेड़ की लकड़ी से भाला बनाकर एकलव्य की तरह अभ्यास शुरू किया। रोज पांच-छह घंटे का अभ्यास। स्कूल स्तर पर जिला स्तरीय प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता। बाद में उसके गुरु आर.डी. सिंह ने उसकी प्रतिभा को पहचान कर उसे प्रशिक्षण दिया। दसवीं पास करने के बाद उन्होंने उसे हनुमानगढ़ कस्बे के नेहरू कालेज में भर्ती कराया। देवेंद्र ने बी.ए अजमेर यूनिवर्सिटी से 2001 में पास किया और वर्ष 1995 में आल इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में 67 मीटर दूरी तक भाला फेंक कर रिकॉर्ड बनाया। आर.डी. सिंह को पैरा खेल की शुरुआत करवाने वाले गुरु के रूप में जाना जाता है। उन्हें कालांतर में द्रोणाचार्य सम्मान भी मिला। देवेंद्र ने फिर अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं की ओर रुख किया और वर्ष 2002 में बुसान एशियाड में स्वर्ण पदक जीतकर तिरंगा लहराया। वर्ष 2003 में ब्रिटिश ग्रो, ट्रिपल जंप और शॉट फुट में तीन स्वर्ण पदक जीते। यह देवेंद्र के संकल्प और साधना का ही परिणाम था कि उसने 2004 के एथेंस और 2016 के रियो पैरालंपिक में स्वर्ण पदक जीतकर देश का नाम रोशन किया। वर्ष 2020 के टोक्यो पैरालंपिक में भले ही वे स्वर्ण पदक नहीं जीत सके, लेकिन रिकॉर्ड प्रदर्शन करते हुए रजत पदक हासिल किया। चालीस साल की उम्र में भी पदक जीतना उनकी बड़ी उपलब्धि है।

मेष
इष्ट मित्रों से लाभ होगा, भोग-ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी, रुके कार्य बनेंगे।

वृष
अपनों से तनाव, प्रत्येक कार्य में बाधा होगी, लाभकारी योजना हाथ से निकल जायेंगी।

मिथुन
धन लाभ, आशानुकूल सफलता का हर्ष होगा, कार्यवृत्ति में सुधार होगा, कार्य बनेंगे।

कर्क
कार्य योजना फलीभूत हो, दैनिक सफलता के कार्य संभव होवेंगें।

सिंह
इष्ट मित्रों से सुखवर्धक हो, मनोबल उत्साहवर्धक बना ही रहेगा, कार्यगति में सुधार होगा।

कन्या
आशानुकूल सफलता से हर्ष होगा, दैनिक व्यवसाय में सुधार होगा, चिन्ता मुक्त होवेंगे।

तुला
आर्थिक योजना सफल होंगी, समय पर सोचे कार्य बनेंगे तथा किसी के धोखे से बचेंगे।

वृश्चिक
दूसरों के कार्य में भटकना पड़ेगा, समय को बचाकर चलने से लाभ ही होगा।

धनु
दैनिक कार्यगति में सुधार होगा, कार्ययोजना फलीभूत होगी, कार्य का ध्यान रखें।

मकर
किसी का कार्य बनने से संतोष होगा, चिन्ता निवृत्ति होगी, व्यवसायिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ
स्त्री शरीर कष्ट, मानसिक बेचैनी रहेगी, उद्विघ्नता व विद्या बाधा, कार्य बाधा बनेगी।

मीन
भाग्य का सितारा प्रबल हो, बिगड़े कार्य बनेंगे, मित्र सहयोगियों से लाभ होवेंगा।

अनंत चतुर्दशी पर हुआ भगवान गणेश का विसर्जन

अतुल्य भास्कर, छतरपुर

10 दिनों से चल रहे गणोशोत्सव का समापन रविवार को अनंत चतुर्दशी के अवसर पर धूमधाम से किया गया। घरों और झांकियों में रखी गई भगवान गणेश की प्रतिमाओं को श्रद्धालुओं के द्वारा गाजे-बाजे के साथ एक शोभायात्रा के रूप में विभिन्न जलस्त्रोतों तक ले जाया गया जहां पहले से मौजूद सुरक्षा इंतजामों के बीच प्रतिमाओं का विसर्जन किया गया। छतरपुर शहर एवं आसपास की प्रतिमाओ के विसर्जन के लिए प्रशासन ने बूढ़ाबांध में इंतजाम किया था। तहसीलदार अभिनव शर्मा ने बताया कि प्रतिमाओं के विसर्जन के दौरान कोई हादसा न हो इसके लिए यहां पर्याप्त पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया था। मौके पर गोताखोर एवं सुरक्षा से जुड़े अन्य साधन भी रखे गए थे। श्रद्धालुओं से उनकी प्रतिमाएं एक टेबिल पर रखवाईं गईं और फिर एक क्रेन मशीन के माध्यम से इन प्रतिमाओं का विसर्जन तालाब के किनारे बनाए गए कुण्ड में किया गया। प्रशासन ने सुरक्षा और जल की शुद्धता दोनों का ध्यान रखते हुए 50 से अधिक प्रतिमाओं का विसर्जन कराया।

देर रात तक खूड़र नदी के दूल्हादेव घाट पर हुआ विसर्जन पर्यटन नगरी में गणेशोत्सव पर्व के समापन तथा अनंत चतुर्दशी के अवसर पर भगवान गणेश की नगर में धूमधाम से झांकी निकली। गणेश भक्तों की टोली बैंडबाजों की धुन पर बप्पा के जयकारे लगाते हुए थिरकते हुए चल रही थी।

पिछले दस दिनों से चल रहे इस त्यौहार का रविवार को धूमधाम से समापन हो गया है। पिछले 16 वर्षों से नगर के सेवाग्राम में गणपति स्थापना करने वाले पत्रकार आनंद अग्रवाल ने भी गणपति बप्पा मोरया अगले बरस तू जल्दी आ के जयकारे लगाते हुए बप्पा को विदाई दी। भगवान गणेश की शोभायात्रा जैन मंदिर मार्ग, बस्ती चौराहे होते हुए नगर भ्रमण के लिए निकली। रास्ते में बप्पा की जगह जगह आरती उतारी गई और प्रसाद वितरण किया गया। इसके बाद खूड ? नदी के दूल्हादेव घाट पर प्रतिमाएं विसर्जित की गईं। यह क्रम देर रात तक चलता रहा।

गणपति की विदाई पर भावुक हुए भक्तगण: बकस्वाहा में 10 दिवसीय गणेशोत्सव के बाद रविवार को भक्तों ने एकजुट होकर बैंड-बाजों, ढ़ोल-नगाड़ों और डीजे की धुन पर नाच गाकर बप्पा को विदा किया है।

नगर के मुख्य मार्गों से गजानन की प्रतिमा को पालकी में बैठाकर शोभा यात्रा निकालने के बाद महेन्द्र सागर तालाब में प्रतिमाओं का विसर्जन किया गया जहां उपस्थित पुलिस बल और परिषदकर्मियों ने सुरक्षा के बीच कार्यक्रम संपन्न कराया। गणपति को विदाई देते हुए कई भक्त भावुक भी दिखाई दिए।

ग्राम देरी में ठाकुरों और कुशवाहा जाति के लोगों के बीच हुआ विवाद पुलिस अधीक्षक कार्यालय के सामने लगा जाम

अतुल्य भास्कर, छतरपुर

जनपद पंचायत छतरपुर के अंतर्गत ग्रामपंचायत देरी में ठाकुर जाति एवं कुशवाहा जाति के लड़कों के बीच में विवाद हुआ विवाद के कारण ठाकुर जाति के लड़कों ने कुशवाहा जाति के लड़कों के साथ गांव के अंदर ही बेजा मारपीट की। जिससे कई कुशवाहाजाति के लड़के गंभीर हालत में जिला चिकित्सालय में भर्ती किए गए। उनके परिवार के लोगों ने आनन फानन में पुलिस अधीक्षक कार्यालय के सामने देर रात्रि को जाम लगा दिया। भारी पुलिस दल आकाशवाणी तिराहे पर बुला लिया गया। अभी तक समाचार लिखे जाने तक वास्तविक स्थिति का पता नहीं लग पाया है।

लेकिन जिले में लगातार हो रही घटनाओं से पूरे जिले में अराजकता और भय का वातावरण बना हुआ है। कमजोर तपके के लोग पूरे जिले में जगह जग प्रताड़ित किए जा रहे हैं। पुलिस कप्तान सचिन शर्मा की पकड़ के बाहर अपराधियों के हौसले लगातार बुलंद हैं। सभी थानों में गरीब गुरवे की कोई सुनने वालानहीं है। थानों में बिना पैसे दिए कोई अपराध कायम नहीं किया जाता। पूरे जिले में एक दिन ज्वालामुखी की तरह पुलिस प्रशासन के खिलाफ ज्वालाफूटने वाला है। जिसकी जिम्मेदार भाजपा के कर्णधार जिले के नेता और शिवराज सरकार होगी।

शहर में कागज की प्लेट बनाने वाली कंपनी दे रही 450 परिवारों को रोजगार

अतुल्य भास्कर, छतरपुर। बढ़ती महंगाई के बीच परिवार का भरण-पोषण एक बड़ी जिम्मेदारी का काम हो चुका है। ऐसे में एक ही परिवार के कई लोग काम कर रहे हैं। शहर में इसी इच्छाशक्ति के कारण कई छोटे उद्योगों का विस्तार हो रहा है। कागज से बनने वाले विभिन्न बर्तनों के निर्माण की छोटी इकाईयां स्थापित की गई हैं जिससे कई परिवार आत्मनिर्भर हुए हैं। शहर में कागज की प्लेट बनाने वाली एक इंडस्ट्री लगभग साढ़े चार सौ परिवारों को रोजगार दे रही है। व्यापारी मुकेश चौबे ने बताया कि वे पिछले 15 वर्षों से व्यापार क्षेत्र में हैं। वर्तमान में सिंगल यूज कागज के दौना, प्लेट, थाली आदि की मांग बढ़ रही है। फुटपाथ कारोबारियों के अलावा विभिन्न समारोहों में भी इन बर्तनों की डिमांड रहती है। इन बर्तनों का निर्माण कुछ सामान्य मशीनों के माध्यम से होता है जिसके जरिये एक परिवार रोजगार से जुड़ जाता है। उन्होंने कहा कि इसके लिए लोगों को शुरूआत में मशीन के लिए पूंजी निवेश करना होता है इसके बाद इन मशीनों से बनने वाले उत्पाद का विक्रय उनकी संस्था करती है जिससे लोग घर बैठे एक रोजगार का साधन निर्मित कर लेते हैं। मुकेश चौबे ने बताया कि इसके लिए एक इलेक्ट्रिक मशीन का उपयोग किया जाता है जिसमें बर्तनों के विभिन्न सांचे का कटर लगा होता है। बर्तनों के निर्माण के लिए बाहर से आने वाले कागज के रोल मशीन में चलाए जाते हैं। जब यह रोल एक सांचे के सामने से गुजरता है तो कटर में लगा सांचा उतने कागज को काटकर उसे कटोरी या प्लेट की शक्ल दे देता है बाद में मानवीय मदद से इन कटोरियों के बण्डल बनाए जाते हैं जिसे बाजार में बेचा जाता है।

जेई को हटाने के लिए हड़ताल जारी

अतुल्य भास्कर, छतरपुर। पिछले दो महीने से लगातार गौरिहार क्षेत्र में मौजूद विद्युत संबंधी समस्याओं का बार-बार ज्ञापन दिए जाने के बाद भी समाधान न होने के कारण नाराज ग्रामीण तीन दिन पहले तहसील परिसर में धरने पर बैठे थे। यह भूख हड़ताल तीसरे दिन भी जारी रही। हड़ताल पर बैठे तीन युवक भूपेन्द्र यादव, रविकरण पाल और बबलू सिंह का तीन दिन में तीन किलो वजन घट गया है। ग्रामीणों का कहना है कि जब तक यहां पदस्थ जेई शिवकुमार सिंह को हटाया नहीं जाता तब तक हमारी हड़ताल जारी रहेगी। आंदोलनकारी भूपेन्द्र यादव ने बताया कि जेई शिवकुमार सिंह के कार्यकाल में पूरे क्षेत्र के किसान बिजली के लिए परेशान हैं। कई गांव अंधेरे में डूबे हैं। यदि कोई व्यक्ति शिकायत करने जाता है तो स्थानीय होने के कारण शिव कुमार सिंह उसके साथ अभद्रता करने लगते हैं। पूर्व में दो बार उनके विरूद्ध ज्ञापन सौंपकर उन्हें हटाने की मांग की जा चुकी है लेकिन उन्हें हटाया नहीं जा रहा है। आंदोलनकारियों ने कहा कि जब तक जेई को नहीं हटाया जाता तब तक हमारी हड़ता जारी रहेगी।

टोल प्लाजा कर्मचारियों पर लगाए मनमानी के आरोप

अतुल्य भास्कर, छतरपुर/लवकुशनगर। गिरधौरी टोल प्लाजा के कर्मचारियों पर मनमानी के आरोप लगाते हुए रविवार को बस ऑपरेटरों ने जमकर प्रदर्शन किया। बस चालकों ने बसों को खड़ा कर चलाने से इंकार कर दिया। उनका आरोप था कि टोल प्लाजा के कर्मचारी उनसे अवैध वसूली कर रहे हैं।इस संबंध में टोल प्लाजा के मैनेजर प्रदीप सिंह ने बताया कि पहले जिस कम्पनी को ठेका मिला था वह काम छोड़कर चली गई है क्योंकि उसे घाटा लग रहा था। अब एमपीआरटीसी खुद ही बैरियर चला रही है और पहले की दरों को बढ़ाकर नई रेट सूची भेजी गई जिस कारण से बस चालकों को लग रहा है कि कर्मचारी उनसे अवैध वसूली कर रहे हैं। वहां बस चालकों का कहना है कि यह पूरा खेल किसी नेता के इशारे पर खेला जा रहा है। शासन के नियमों को ताक पर रखकर मनमाने तरीके से वसूली की जा रही है।

गरीब आदिवासी की हत्या के विरोध मे सौपा ज्ञापन, दबंगो ने लाठी डंडों से पीट पीट कर की थी हत्या

अतुल्य भास्कर, छतरपुर/घुवारा

भगवा थाना अंतर्गत ग्राम सिमरिया में दिनांक 11सितम्बर को हल्के आदिवासी की गाव के दबंगो लाठी डंडों से पीट पीट कर निर्मम हत्या कर दी गई थी। युवा शक्ति(जयस)जिला छतरपुर के द्वारा एसडीएम बड़ामलहरा के नाम तहसीलदार घुवारा को ज्ञापन सौपा है। ज्ञापन के माध्यम से कहा गया है कि जिन आरोपियों ने इस बारदात को अंजाम दिया है उन मेंसे दो लोंगो को पुलिस ने छोड़ दिया है उनका नाम एफआरआई में जोड़ा जावे,पीड़ित परिवार शासन द्वारा भरपूर मुआवजा राशि दिलाई जावे साथ पीड़ित परिवार को सुरक्षा मुहैया कराई जावे।

जय आदिवासी युवा शक्ति संघठन के प्रदेश अध्यक्ष अंतिम मुजाल्दा एंव कुँवर सूर्यजीत सिंह के साथ एडव्होकेट सुनील आदिवासी के नेतृव में रविवार की दोपहर 12 बजे सिमरिया तिराहा पर नारेवाजी कर प्रशासन का विरोध करते हुए रैली के माध्यय से हल्के आदिवासी के घर करीबन 500 लोंगो का काफिला पहुचा जहा पीड़ित के घर एक शोकसभा आयोजित की गई ततपश्चात ग्राम सिमरिया के मंगल भवन के पास एक सभा की गई जिसमें संघठनो के पदाधिकारियों के द्वारा पुलिस प्रशासन को आड़े हाथों लेते हुए शिवराज सरकार को भी जमकर कोसा गया।

वही पुलिस पर आरोप लगाते हुए कहा है आज कल पुलिस नेताओ के इशारे पर काम कर रही है जो संबिधानिकरूप से गलत है।जय आदिवासी युवा शक्ति संघठन के प्रदेश अध्यक्ष अंतिम मुजाल्दा ने कहा है हम आदिवासियों को शिक्षित होना और संघठित होना बहुत जरूरी है अगर हम अपनी आदतों को नही सुधार पाए तो आय दिन अत्याचार समाज पर होता रहेगा और आय दिन घटनाएं होती रहेगी।इसी क्रम में प्रशासन ज्ञापन देकर एक सप्ताह का अल्टीमेटम देते हुए कहा है कि प्रशासन हमारी मांगो पर विचार नही किया तो हम समूचे मध्य प्रदेश के आदिवासी मिलकर उग्र आंदोलन करने को मजबूर होंगे जिसकी जबादारी शासन व प्रशासन की रहेगी।इस कार्यक्रम को देख जिला के बरिष्ठ अधिकारियों ने पहले से तैयारी कर ली थी निपटने के बड़ामलहरा अनुभाग के सभी थानों का बल एवं थाना प्रभारी मौजूद थे।फिलहाल भगवा पुलिस ने इस मामले को गम्भीरता लेते हुए घटना दिनांक 11 सितम्बर को ही मौके से आरोपी की तलाश कर दो आरोपियों को जेल भेज दिया था वही मृतक हल्के आदिवासी के शव के अंतिम संस्कार हेतु व्यवस्थाये जुताई गई है और मृतक के परिजनों को हर सम्भव मदद का भरोसा भी दिया गया और निष्पक्ष जांच भी कराई जा रही है।इस कार्यक्रम में जय आदिवासी युवा शक्ति के प्रदेश अध्यक्ष अंतिम मुजाल्दा,कुँवर सूर्यजीत सिंह के साथ एडव्होकेट सुनील आदिवासी,देवीदीन अहिरवार सेधपा,मुन्ना अहिरवार भेलदा,जितेंद्र भारती भीम आर्मी सम्भाग अध्यक्ष सागर,मोतीलाल बर्मा जिलाध्यक्ष भीम आर्मी के अलावा सैकड़ो की तादाद में आदिवासियों की भीड़ मौजूद रही।

नाले में मिला नाबालिक छात्रा का शव, दुष्कर्म के बाद हत्या की आशंका

अतुल्य भास्कर, दमोह। गणेश विसर्जन के दिन बांदकपुर चौकी अंर्तगत बनवार रोड पर करोंदिया नाले में नाबालिक छात्रा का संदिग्ध परिस्थियों में शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। सूचना मिलने पर हिंडोरिया थाना प्रभारी दल सहित मौके पर पहुंचे। मृतक की पहचान हिंडोरिया थाना अंतर्गत निवासी के रूप में की गई है। मृतिका के पिता ने बताया कि छात्रा बीती रात 9 बजे से गायब थी। प्राप्त जानकारी के अनुसार बांदकपुर बनवार मार्ग पर नाले की पुलिया के पास एक युवती का शव पड़े होने की सूचना बांदकपुर पुलिस चौकी को मिली थी। जिसके बाद मौके पर हिंडोरिया थाना पुलिस एवं बांदकपुर चौकी पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिया के नीचे बह रहे नाले में एक नाबालिक छात्रा का शव बरामद किया गया। नाबालिक छात्रा के मुंह पर साड़ी लिपटी हुई थी। वहीं छात्रा की लाश को देखकर बलात्कार के बाद हत्या का अंदाजा लगाया जा रहा है। थाना प्रभारी हिंडोरिया ने बताया कि मृतिका के शव को परीक्षण के लिये भेज दिया गया है। शव परीक्षण की रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्यवाही की जाएगी।

गणपति बप्पा को भक्तों ने धूमधाम से दी विदाई

अतुल्य भास्कर,बीना। अनंत चर्तुदशी पर श्रद्धा, भक्ति के साथ भगवान गणेश का विसर्जन किया गया। गणेश विसर्जन को लेकर प्रशासन ने जो गाइड लाइन बनाई थी, उसका सख्ती से पालन कराया गया। पंडालों व घरों में सुबह से ही हवन-पूजन होना लगा था। दोपहर 12 बजे के बाद कई मूर्तियां विसर्जित होने के लिए निकल चुकी थीं। बड़ी प्रतिमाएं थोड़ी देर से निकली। इस मौके पर पूरा शहर श्रद्धा, भक्ति और आस्था के रंग में रंगा न नजर आ रहा था। बीना मोतीचूर नदी पर प्रतिमा विसर्जन के लिए घाट तैयार किया गया था। यहां बीना थाना प्रभारी कमल निगवाल,नगर पालिका सीएमओ सहित अन्य अधिकारी भी मौजूद रहे। नपा कर्मचारी और गोताखोरों की मदद से बड़ी प्रतिमाओं का विधि विधान के साथ विसर्जन किया। मूर्ति विसर्जन का सिलसिला देर शाम तक चलता रहा। पुलिस ने भी सुबह से शहर में जगह-जगह घूम-घूमकर प्रतिमाओं को समय पर विसर्जित करने के लिए प्रोत्साहित किया।गणपति विसर्जन के दौरान श्रद्धालु गणपति बप्पा मोरेया, अगले वर्ष तू फिर से आ.. के उद्घोष लगाते हुए चल रहे थे। गणपति विसर्जन होने के बाद शाम को पंडालों में सन्नाटा पसरा रहा।

अतुल्य भास्कर, पथरिया। नगर में गणेशोत्सव के अंतिम दिवस सभी लोगो ने भगवान गणेश को खुशी खुशी विदाई दी और बड़े तालाब पर हर्षोल्लास से प्रतिमा विसर्जन किया। प्रशासन ने कोरोना गाइडलाइन के तहत विसर्जन बड़े तालाब पर व्यवस्था की एवं अलाउंसमेन्ट के माध्यम से श्रद्धालुओं को दिशा निर्देश दिए। सुबह से ही विसर्जन को लेकर श्रद्धालुओं द्वारा बाजे गाजे के साथ बड़े ही आनंद के साथ गणेश प्रतिमा का विसर्जन किया। जिसमें छोटे छोटे बच्चों ने नाच गाकर इस आयोजन का लुफ्त उठाया। प्रतिमा विसर्जन अनंत चतुर्दशी पर सुबह से ही प्रारम्भ हो गया था जो देर शाम तक जारी रहा। नगर के सभी मंडलों ने गणेश प्रतिमाओं को ट्रैक्टर पर आकर्षक झांकियों में सजाकर नगर भ्रमण कराया और ढोल-ढमाकों के साथ गणपति बप्पा मोरिया के नारों के साथ भगवान गणेश को विदाई दी । नगर में पिछले दस दिनों से काफी धूमधाम से इस गणेशोत्सव को मनाया गया साथ ही विभिन्ना सांस्कृतिक आयोजन किए गए। अधिकांश मंडलों में भोजन प्रसादी का आयोजन किया गया उसके पश्चात उत्सव के अंतिम दिन धूमधाम से विसर्जन किया।

बीना विधायक ने किया बीना के दो वार्डो में सीसी रोड का भूमि पूजन

अतुल्य भास्कर/बीना

निकाय निधि से बनने वाले दो सीसी रोड का भूमि पूजन बीना विधायक महेश राय के कर कमलों द्वारा किया गया । पहला सीसी रोड का भूमि पूजन मुख्य मार्ग वीरसावरकर वार्ड में भारत प्रेस के बाजू वाली गली से लेकर सिरोठिया के मकान तक जिसकी लागत 6,73,120 रुपये (छह :लाख तेहत्तर हजार एक सौ बीस रुपये) है। एवं दूसरा पूजन कानूनगो वार्ड में डॉक्टर एनके पांडे वाली गली में किया। जिसकी लागत 8,51,632 रुपये (आठ लाख इक्यावन हजार छह सौ बत्तीस रुपये) है। इस अवसर पर विधायक महेश राय ने कहा कि दोनों सीसी रोड का निर्माण गुणवत्ता पूर्ण तरीके से हो ताकि रोड अधिक दिनों तक चल सके और वार्ड वासियों को इसका लाभ मिल सके एवं शहर के जिन- जिन वार्डो की गलियों में सीसी रोड की जरूरत है उन गलियों में शीघ्र ही सीसी रोड बनाए जाएंगे। दोनों सीसी रोड के भूमि पूजन के अवसर पर शिव कुमार ठाकुर,भूपेंद्र सिंह ठाकुर,वीर सावरकर वार्ड पार्षद श्रीमती सुनीता राय,कानूनगो वार्ड पार्षद डॉक्टर नरेंद्र ठाकुर,रतन सिंह यादव,राजेंद्र दुबे,विनोद पुरोहित,रघुवीर सिंह राजपूत,शैलेश शाह, मदन सिंह राजपूत,अमर प्रताप सिंह ठाकुर सुरेंद्र सिंह ठाकुर डॉक्टर एनके पांडे ,श्रीमती भारती राय, बलराम राय,ठेकेदार आलेख राय नगर पालिका उपयंत्री गगन सूर्यवंशी सहित काफी संख्या में वार्ड वासी उपस्थित रहे।

गणेश विसर्जन को जाते समय ट्रैक्टर ट्रॉली में करंट लगने से एक व्यक्ति की मौत, घायलों को किया अस्पताल में भर्ती

अतुल्य भास्कर, बीना

अनंत चर्तुदशी पर श्रद्धा,भक्ति के साथ भगवान गणेश का विसर्जन किया जा रहा था। वहीं गणेश प्रतिमा विसर्जन के लिए जाते समय खिमलासा थानांतर्गत आने वाले ग्राम बसाहारी में एक ट्रैक्टर ट्रॉली में रविवार शाम तकरीबन 6 बजे 33 केव्ही लाइन की चपेट में आ गया।करंट लगने से एक व्यक्ति लक्ष्मीनारायण पिता राजाराम तिवारी (45) की मौत हो गई। वही 6 अन्य लोग बुरी तरह से झुलस कर घायल हो गए। घायलों में एक व्यक्ति लक्ष्मीनारायण कटारे को सागर रेफर किया गया।वही चार अन्य घायलों का सरकारी अस्पताल बीना में इलाज जारी हैं।

ट्रैक्टर-ट्रॉली के पहियों में आग लगने से हुए जलकर खाक : हाइटेंशन लाइन के करंट में ट्रैक्टर-ट्रॉली के पहिए जलकर खाक हो गए। कुछ लोग जो श्रीगणेश को विराजमान किए गए लकड़ी के पाट पर बैठे थे, उन्हें करंट नहीं लगा।

लोहे के पाइप 33 केव्ही लाइन से टकराने से हुआ हादसा : पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार बीना अयोध्यापुरी कॉलोनी में लोगों के द्वारा गणेश प्रतिमा की स्थापना की गई थी। जिसके बाद आज कॉलोनी के करीब डेढ़ दर्जन लोग ट्रैक्टर-ट्रॉली में झांकी सजाकर प्रतिमा विसर्जन के लिए बसहारी तालाब जा रहे थे। ट्रॉली में झांकी सजाने के लिए लोहे के पाइप लगाए गए थे। बसहारी गांव में पहुंचते ही लोहे का पाइप रोड के ऊपर से निकली 33 केव्ही लाइन से टकरा गया। इससे ट्रैक्टर-ट्रॉली में करंट फैल गया। ट्रॉली में बैठे सभी लोग करंट की चपेट में गए। इसमें लक्ष्मीनारायण पिता राजाराम तिवारी (45), अजय पिता कैलाश लिटौरिया (27), लक्ष्मीनारायण पिता सीताराम कटारे (65), पुष्पेंद्र पिता लक्ष्मीनाराण कटारे (23), प्रकाश पिता सुरेंद्र साहू (15). सचिन पिता मनोज कटारे (11), हरिओम पिता लक्ष्मीनारायण तिवारी (20) करंट में बुरी तरह से झुलस गए। सभी घायलों को इलाज के लिए सिविल अस्पताल लाया गया।जहां डॉक्टरों ने लक्ष्मीनारायण तिवारी को मृत घोषित कर दिया। जबकि लक्ष्मीनारायण कटारे की हालत गंभीर होने पर सागर रेफर कर दिया गया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

लकड़ी का तख्त होने से अन्य लोगो की जान बची : झांकी में शामिल लोगों ने बताया कि ट्रॉली में प्रतिमा रखने के लिए लकड़ी का तख्त रखा गया था। प्रतिमा को संभालने के लिए तख्त पर भी बहुत से लोग बैठे हुए थे। इसके चलते वह करंट की चपेट में नहीं आ पाए। उन्हीं लोगों के चिल्लाने पर ट्रैक्टर पर सवार लोगों के साथ-साथ गांव के लोगों ने टेंट के पाइप को डंडों की मदद से तिरछा कर ट्रॉली में सवार अन्य लोगों की जान बताई। यदि ट्रैक्टर में तख्त नहीं होता तो भयावह हादसा हो सकता था।

कॉलेज बना बर्थडे पार्टी सेंटर: कोरोना काल में मिला आराम ही आराम..

नवचयनित सहायक प्राध्यापकों ने उठाया भरपूर फायदा

अतुल्य भास्कर, पथरिया

तहसील का एकमात्र सरकारी कॉलेज अपने कारनामों के कारण हमेशा चर्चा का विषय रहा है जहां से बौद्धिक धाराएं कम आय के स्रोत ज्यादा बहते है। यहां पिछले कई वर्षों से एक सभागार का निर्माण कार्य चल रहा है पर अब भी अधूरा है,कॉलेज के पास बिल्डिंग तो है पर बाउंड्रीवाल नहीं। खेल मैदान उपलब्ध है पर खेल गतिविधियां नहीं पर जानकारों का तो यहां तक कहना है कि बिल बाउचर पर बहुत सफाई से काम होता है पिछले वर्ष से वैश्विक महामारी के प्रभाव के कारण शैक्षणिक कार्य भी शिथिल रहा जिसका फायदा यहां नियुक्त हुए नव चयनितों को भी मिला और बहुत से तो सिर्फ अप-डाउन ही करते रहे क्योकि क्लासेस प्रारम्भ नहीं थी

पर अब नई शिक्षा नीति के आ जाने औ? क्लास शुरू हो जाने के बाद देखना यह है कि जिस संस्था पर शासन लाखो रुपये सिर्फ सहायक प्राध्यापकों की तनख्वाह पर खर्च कर रहा है उसका कितना फायदा छात्रों को मिलेगा या यह सिर्फ सर्टिफिकेट/ डिग्री बाटने का सेंटर रह जाएगा। सोशल मीडिया पर एक फोटो वायरल होने के बाद नगर में पुनः चर्चा होने लगी है कि कॉलेज का योगफल उत्सव मनाने में तो अच्छा है पर बच्चों को पढ़ाने और नई दिशा देने में अरुचि प्रकट करता रहा है।

इस कॉलेज में पिछले 30 साल से जमे हिंदी के एक सह प्राध्यापक का रिटायरमेंट हुआ जिन्होंने रुपये तो खूब जोड़े पर हिंदी के उत्थान और विकास के लिए कुछ नहीं किया।

लोगों को तो अब यहां तक कहना है कि वर्तमान हालात देखकर लगता है कि क्षेत्र के आनेवाली पीढ़ी को शायद ही कोई वैचारिक और बौद्धिक फायदा मिले क्योकि यहां का स्टाफ पढ़ाई से ज्यादा अन्य कामों में रुचि लेता है।

विराट की मुश्किलें बढ़ीं, कुंबले फिर बन सकते हैं टीम इंडिया के हेड कोच

नई दिल्ली.एजेंसी

आगामी टी-20 वर्ल्ड कप के बाद टीम इंडिया के हेड कोच रवि शास्त्री, गेंदबाजी कोच भरत अरुण और फील्डिंग कोच आर श्रीधर का कार्यकाल खत्म हो रहा है। विराट की मुश्किलें बढ़ने वाली है। बीसीसीआई भारत के पूर्व दिग्गज लेग स्पिनर अनिल कुंबले को एक बार फिर से टीम इंडिया का हेड कोच बनाना चाहता है और इसके लिए वो उनसे संपर्क करने की तैयारी में है।

कुंबले ने साल 2017 में टीम इंडिया के हेड कोच के पद से इस्तीफा देने का ऐलान किया था। तब उनके और कोहली के बीच अनबन की खबरें मीडिया रिपोर्ट्स में सामने आई थी। विराट कोहली ने टी-20 वर्ल्ड कप 2021 के बाद भारतीय टीम की टी-20 टीम से कप्तानी छोड़ने का ऐलान गुरुवार को किया था।4 साल पहले कुंबले के हेड कोच के पद से हटने के बाद कोहली ने रवि शास?त्री को उनकी जगह रिप?लेस करने का समर्थन किया था। इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक सुप्रीम कोर्ट द्वारा अनिवार्य पैनल की सिफारिशों के बाद कुंबले को वापस लाने के तरीकों का पता लगाया जा रहा है। कोहली के टी-20 कप्तानी छोड़ने के बाद बीसीसीआई इस बात को लेकर आश्वस्त है कि टीम को एक नए कोच की आवश्यकता है। गुरुवार को कोहली के इस्तीफे के बाद प्रेस विज्ञप्ति में बीसीसीआई सचिव जय शाह ने कहा था कि बोर्ड के पास टीम इंडिया के लिए एक स्पष्ट रोडमैप है।

पाकिस्तान को एक और झटका, सुरक्षा को लेकर ईसीबी कर रहा विचार

टीम इंग्लैंड भी टी20 वर्ल्डकप से पहले रद्द कर सकती है पाक दौरा

नई दिल्ली.एजेंसी

न्यूजीलैंड के पाकिस्तान दौरा रद्द किए जाने के बाद अब इंग्लैंड भी पाकिस्तान दौरे को लेकर विचार कर सकता है। इंग्लैंड को अक्टूबर में पाकिस्तान का दौरा करना है। न्यूजीलैंड ने शुक्रवार को मैच शुरू होने से ठीक पहले पाकिस्तान दौरे को सुरक्षा कारणों की वजह से रद्द करने का ऐलान किया था। अब इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड ने भी बयान जारी कर कहा है कि वह दौरे को लेकर विचार करेगा और 48 घंटे के अंदर पर अपने फैसले से अवगत करा देगा।

इंग्लैंड की पुरुष और महिला टीम को अगले महीने पाकिस्तान का दौरा करना है। पुरुष टीम को टी20 वर्ल्ड कप से पहले पाकिस्तान में 13 और 14 अक्टूबर को टी20 मैच खेलना है। उसके बाद इंग्लिश टीम को पाकिस्तान से टी20 वर्ल्ड कप खेलने के लिए, श्व जाना है। अब माना जा रहा है कि इंग्लिश टीम पाकिस्तान न जाकर सीधे श्व में पहुंचेगी।

वहीं इंग्लैंड महिला टीम को पाकिस्तान दौरे पर 2 टी20 मैच के अलावा 3 वनडे मैचों की सीरीज भी खेलनी है। 13 और 14 अक्टूबर को टी20 मैच खेलना है, जबकि 17, 19 और 21 अक्टूबर को वनडे मैच।इंग्लिश क्रिकेट

बोर्ड (श्रष्टक्र) के एक प्रवक्ता ने कहा, ÷हमें पता है कि न्यूज़ीलैंड ने पाकिस्तान का दौरा सुरक्षा कारणों से रद्द कर दिया है। ऐसे में हमारी सुरक्षा एजेंसी जो पाकिस्तान में ही है और स्थिति को देखते हुए वह जैसा हमें बताती है, हम उसी हिसाब से अगले 24 से 48 घटें में फैसला करेंगे।÷

2005 के बाद इंग्लैंड ने नहीं किया है पाकिस्तान का दौरा

पाकिस्तान क्रिकेट के लिए इंग्लैंड का यह दौरा काफी अहम है, क्योंकि इंग्लैंड ने 2005 के बाद से पाकिस्तान का दौरा नहीं किया है। वर्ल्डकप से पहले दो टी20 मैचों की सीरज को नई शुरुआत के तौर पर देखा जा रहा है। पाकिस्तान ने भी लॉकडाउन के समय बायोबबल के अंदर इंग्लैंड में जाकर क्रिकेट खेला था।

इंग्लैंड टेस्ट टीम को भी अगले साल पाकिस्तान दौरे पर जाना है, लेकिन उस दौरे को लेकर अभी कुछ कह पाना जल्दबाज़ी होगी। हालांकि इतना तो तय है कि अगर इस समय सुरक्षा कारणों से ये दौरा रद्द होता है तो इसका असर 2022 के टेस्ट दौरे पर भी पड़ेगा।

शास्त्री बोले-कोच होना आसान नहीं, हमेशा बंदूक की नोक पर रहते हैं

नई दिल्ली.एजेंसी

भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच रवि शास्त्री इन दिनों दो वजहों से सुर्खियों में छाए गए हैं. इंग्लैंड में टेस्ट सीरीज का आखिरी टेस्ट मैनचेस्टर में खेला जाना था जो कोरोना के चलते रद्द हो गया है, इसके लिए ब्रिटिश मीडिया और फैंस ने शास्त्री को जिम्मेदार ठहराया.

शास्त्री ने लंदन में अपने किताब का विमोचन किया था जिसके बाद वह कोरोना पॉजिटिव निकले थे. इसके अलावा टी20 वर्ल्ड कप से बाद शास्त्री टीम इंडिया से अलग हो जाएंगे. शास्त्री का अनुबंध इसी साल नवंबर में खत्म हो रहा है और वह भारतीय टीम से आगे नहीं जुड़ा रहना चाहते. शास्त्री ने भारतीय टीम को कोचिंग देने के मुद्दे पर कहा कि यह आसान काम नहीं है. आप हमेशा निशाने पर होते हैं.

रवि शास्त्री ने एक अंग्रेजी अखबार को दिए इंटरव्यू में भारत में क्रिकेट के प्रति उत्साह के बारे में कहा कि कोविड है या नहीं, उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं है. वे चाहते हैं कि आप जीतें और रन बनाएं. शास्त्री ने कहा, आप जानते हैं, भारत का कोच होना ब्राजील या इंग्लैंड का फुटबॉल कोच होने जैसा है. आप हमेशा बंदूक की नोक पर होते हैं।

बिन्नी की नई पारी, असम टीम में संभालेंगे सहायक कोच का जिम्मा

नई दिंल्ली। इंटरनेशनल क्रिकेट को अलविदा कहने के बाद स्टुअर्ट बिन्नी ने किया नई पारी का आगाज, असम टीम में संभालेंगे सहायक कोच की जिम्मेदारी हाल ही में इंटरनेशनल क्रिकेट से रिटायरमेंट का ऐलान करने वाले भारत के पूर्व ऑलराउंडर स्टुअर्ट बिन्नी असम रणजी ट्रॉफी टीम के अस्टिेंट कोच होंगे। उन्होंने इस बात की जानकारी अपने सोशल मीडिया पर दी है। बिन्नी ने संन्यास लेने के बाद ही कोचिंग को लेकर अपनी इच्छा जाहिर की थी। स्टुअर्ट बिन्नी ने अपने इंटरनेशनल करियर में टीम इंडिया के लिए 6 टेस्ट, 14 वनडे और तीन टी-20 मैच खेले।

जिम्बाब्बे की दूसरे टी-20 मैच में जीत, आखिरी ओवर में स्कॉटलैंड ने लगातार 4 विकेट गंवाए

नई दिल्ली.एजेंसी

जिम्बाब्वे ने एडिनबर्ध में खेले गए दूसरे टी-20 मुकाबले में स्कॉटलैंड के खिलाफ रोमाचंक जीत दर्ज की। जिम्बाब्वे ने स्कॉटलैंड को 10 रनों से हराकर तीन टी-20 मैचों की सीरीज 1-1 से बराबरी कर ली है। आखिरी ओवर में स्कॉटलैंड को जीतने के लिए 13 रन चाहिए थे। लेकिन लगातार 4 गेंदों में उसके 4 विकेट गिरे और मेहमान टीम ने मुकाबला अपने नाम कर लिया। 137 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी स्कॉटलैंड की टीम 19.4 ओवरों में 126 रनों पर सिमट गई।

पैन कार्ड को आधार से 31 मार्च तक कर सकेंगे लिंक

मुबंई। केंद्र सरकार ने पैन कार्ड से आधार को लिंक करने की आखिरी तारीख एक बार फिर बढ़ा दी है। इससे पहले आधार से पैन को लिंक करने की आखिरी तारीख 30 सितंबर थी, जिसे बढ़ाकर 31 मार्च 2022 कर दी गई है। वित्त मंत्रालय की तरफ से यह जानकारी दी गई है। इस तारीख तक आधार-पैन लिंक न करने पर आपका पैन इनऑपरेटिव (निष्क्रिय) घोषित कर दिया जाएगा। इनऑपरेटिव पैन का उपयोग करने पर आप पर 10 हजार रुपए जुर्माना लगाया जा सकता है। इस समस्या से बचने के लिए आपको 31 मार्च 2022 तक आधार-पैन लिंक करना होगा।यहां नीचे की तरफ लिंक आधार स्टेटस का ऑप्शन मिलेगा, उस पर क्लिक करें। इसके बाद अगला पेज खुलेगा जहां आपको अपना आधार और पैन नंबर डालकर व्यू आधार लिंक स्टेटस पर क्लिक करना होगा। इस पर क्लिक करते ही स्क्रीन पर आधार-पैन से लिंक है या नहीं, इसकी जानकारी आ जाएगी।

त्योहारों के बीच सोने में गिरावट जारी

1,621 रुपए घटे सोने के दाम, 45,207 रुपए प्रति 10 ग्राम पर आया

नई दिल्ली.एजेंसी

त्योहारों के बीच सोने की कीमतों में भारी गिरावट आई है। दिल्ली के सराफा बाजार में शुक्रवार को 24 कैरेट सोना 1,130 रुपए सस्ता होकर 45,207 रुपए प्रति 10 ग्राम रह गया। गुरुवार को भी दिल्ली में सोना 491 रुपए सस्ता हुआ था। इस तरह सिर्फ दो दिन में सोना 1,621 रुपए सस्ता हुआ है।

सोने को डॉलर मजबूत होने का खामियाजा उठाना पड़ रहा है। एचडीएफसी सिक्युरिटीज के वरिष्ठ कमोडिटी विश्लेषक तपन पटेल ने कहा, 'अमेरिका में रिटेल बिक्री के जोरदार आंकड़े आने से डॉलर को सपोर्ट मिलने का असर सोने पर देखा जा रहा है।' इससे पहले 05 अप्रैल को 24 कैरेट सोना 45,259 रुपए और 22 कैरेट सोना 41,457 रुपए था। इसके बाद 24 अगस्त को सोना 47,710 रुपए तक गया था।

सोना केवल दिल्ली में सस्ता नहीं हुआ है, बल्कि पूरे देश के सराफा

बाजारों में गिरावट का रुझान देखा जा रहा है। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन (आईबीजेए) के मुताबिक, शुक्रवार को 24 कैरेट सोने की कीमत 46,310 रुपए, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 42,420 रुपए रह गई। आईबीजेए के हिसाब से बीते दो दिन में शुद्ध सोने की कीमत 945 रुपए और जेवराती सोने के दाम 866 रुपए घटे हैं।

कोच्चि के इनोवेशन पार्क में 690 करोड़ रुपए का निवेश करेगी टीसीएस

नई दिल्ली। प्रमुख आईटी सेवा प्रदाता टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) ने कोच्चि में एक नवोन्मेष पार्क स्थापित करने के लिए 690 करोड़ रुपये के निवेश पर सहमति जतायी है। इससे केरल सरकार की राज्य में निवेश आकर्षित करने की कोशिशें सफल होती दिख रही हैं। राज्य सरकार ने कोच्चि के कक्कनड में स्थित किन्फ्रा इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर में इलेक्ट्रॉनिक्स हार्डवेयर और आईटी/आईटीईएस की खातिर एक इकाई स्थापित करने के लिए टीसीएस लिमिटेड को 36.84 एकड़ भूमि आवंटित की है।

सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

एक आधिकारिक बयान में कहा गया है कि मुख्यमंत्री पिनराई विजयन और उद्योग मंत्री पी राजीव की उपस्थिति में शुक्रवार को यहां इस संबंध में एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किया गया। किन्फ्रा के प्रबंध निदेशक संतोष कोशी थॉमस और टीसीएस केरल के उपाध्यक्ष दिनेश पी थंपी ने सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। बयान के मुताबिक प्रस्तावित परियोजना को टीसीएस नवोन्मेष पार्क के नाम से जाना जाएगा।

मनोरंजन

प्रशंसक ने पूछा, पान मसाले के ऐड में काम क्यों किया?

अमिताभ बोले- व्यवसाय के बारे में सोचना पड़ता है

बॉलीवुड अभिनेता अमिताभ बच्चन सोशल मीडिया पर खूब एक्टिव रहते हैं। फेसबुक- ट्विटर से इंस्टाग्राम- ब्लॉग तक, अमिताभ अपने फैन्स को अपडेट देते रहते हैं। इस बीच जब हाल ही में अमिताभ बच्चन से एक सोशल मीडिया यूजर ने सवाल पूछा तो शहंशाह ने भी उसका शानदार अंदाज में जवाब दिया।

अमिताभ का पोस्ट

दरअसल हाल ही में अमिताभ ने एक फेसबुक पोस्ट किया था। इस पोस्ट में अमिताभ ने लिखा था, एक घड़ी खरीदकर हाथ में क्या बाँध ली, वक्त पीछे ही पड़ गया मेरे। इस पर एक सोशल मीडिया यूजर ने लिखा, प्रणाम सर, सिर्फ एक बात ही पूछनी है आपसे... क्या जरूरत है कि आपको भी कमला पसन्द पान मसाले का विज्ञापन करना पड़ा, फिर क्या फर्क है आप में और इन टटपुंजियो में....।

नया रणक्षेत्र, एथनिक वियर में टाटा, बिड़ला और अंबानी आए आमने-सामने

1 लाख करोड़ के मार्केट पर कब्जे की होड़

नई दिल्ली.एजेंसी

देश में शादी-विवाह और तीज-त्योहारों के मौके पर पहने जाने वाले एथनिक वियर (लहंगा, शेरवानी, डिजाइनर साड़ी, कुर्ते आदि) के कारोबार का अधिकांश हिस्सा हमेशा से असंगठित और छोटे-मझोले डिजाइनर्स, ब्रांड और मैन्युफैक्चरर्स के हाथ में रहा है। लेकिन अब तस्वीर बदलने लगी है।

देश के सबसे बड़े उद्योग घराने टाटा समूह, आदित्य बिड़ला समूह और रिलायंस रिटेल इस बाजार में कूद पड़े हैं।वेस्टसाइड के जरिए पहले से एथनिक वियर में कारोबार कर रहा टाटा समूह टाइटन की तनेरा रेंज के माध्यम से इस सेगमेंट में अपनी मौजूदगी को मजबूती दे रहा है। वहीं, आदित्य बिड़ला फैशन एंड रिटेल जो अब तक वैन ह्यूसेन और पीटर इंग्लैंड जैसे ब्रांड के जरिए वेस्टर्न क्लोदिंग पर ध्यान दे रही थी, वह भी सब्यसाची, तरुण ताहिलयानी और शांतनु एंड निखिल जैसे डिजाइनर ब्रांड में हिस्सेदारी खरीद कर एथिनक वियर में मौजूदगी

दर्ज करा रही है।

रेमंड ने अलग एथनिक रेंज लॉन्च की

रेमंड ने भी अपनी एथनिक रेंज अलग से लॉन्च की है। इसके अलावा रिलायंस ग्रुप ने अपनी रिटेल चेन ट्रेंड्स के माध्यम से अवांत्रा बाय ट्रेंड्स लॉन्च करने की घोषणा की है। इसके जरिए एक्सक्लूसिव साड़ी और एथनिक वियर के स्टोर डिजाइन किए जाएंगे।

लेडीज सेगमेंट की 85फीसद हिस्सेदारी

फैशन रिटेल के क्षेत्र में काम करने वाली कंपनी टेक्नोपैक के सीनियर पार्टनर अमित गुगनानी के मुताबिक भारत का एथनिक वियर का मार्केट लगभग 1 लाख करोड़ रुपए का है। इसमें 85 फीसदी से ज्यादा हिस्सेदारी महिलाओं के सेगमेंट की है। एथनिक वियर ब्रांड कल्कि फैशन के निदेशक निशित गुप्ता कहते हैं, भारत में साल भर त्योहार और शादी-विवाह का मौसम बना रहता है। यही वजह है कि टाटा-बिड़ला और अंबानी जैसे बड़े समूह भी इसमें हाथ आजमा रहे हैं।हंगी एथनिक वियर सेगमेंट में उतरने का हमारा उद्देश्य डिजाइनर क्लोदिंग और क्वालिटी की पेशकश करना है। हम अपने पोर्टफोलियो में डिजाइनर कुर्ता और ब्लाउज जैसी चीजें भी शामिल कर रहे हैं। हमारा आइडिया महंगी और एक्सक्लूसिव रेंज लॉन्च करने का है, जो हमारे ब्रांड के साथ मेल खाती हैं।

शहनाज के भाई शहबाज ने सिद्धार्थ के चेहरे का बनवाया टैटू

शहनाज गिल के भाई शहबाज ने दिवंगत एक्टर सिद्धार्थ शुक्ला की यादों को जिंदा रखने का एक और तरीका ढूंढ लिया है। उन्होंने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट के जरिए ये बताया है कि उन्होंने सिद्धार्थ के चेहरे का टैटू अपने हाथ पर बनवाया है। इसके साथ ही उन्होंने अपनी बहन का शहनाज का नाम भी लिखाया है। शहबाज का ये पोस्ट सोशल मीडिया पर वायरल हो चुका है। लोग एक बार फिर एक्टर को याद करते हुए भावुक हो गये।

सिद्धार्थ के चेहरे का टैटू अपने हाथ पर बनवाया

शहबाज इंस्टाग्राम पर इस फोटो को शेयर करते हुए लिखा- ये यादें हमारे साथ हमेशा रहेंगी, आप मेरे साथ मेरी यादों में हमेशा जिंदा रहोगे। शहबाज से पहले उनके पिता संतोख सिंह गिल ने अपनी बेटी को सिद्धार्थ शुक्ला के गम से निकालने के लिए उन्होंने शहनाज के नाम का टैटू बनवाया था।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक अंकित मिश्रा द्वारा बालाजी प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 3, लिंक रोड नं. 3, नेशनल प्रेस एरिया, पत्रकार कॉलोनी के पास भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित एवं मिश्रा भवन पुलिस चौकी के सामने शनीचरी सागर (म.प्र.) 470-002 से प्रकाशित
संपादक- अंकित मिश्रा, मोबा. 91111-71095। समस्त न्यायिक कार्यवाहियों के लिए क्षेत्राधिकारी सागर न्यायालय का रहेगा। आर.एन.आई. रजिस्ट्रेशन क्रमांक MPHIN/2017/75816

राज कुंद्रा पोर्नोग्राफी केस

कुंद्रा ने बनाई थीं 119 पोर्न फिल्में 8.84 करोड़ रुपए में बेचना चाहता था

मुंबई ■ एजेंसी

पोर्न फिल्मों के कारोबारी राज कुंद्रा ने 2 साल में अपने ऐप के यूजर्स 3 गुना और मुनाफा 8 गुना बढ़ाने का प्लान बनाया था। वह अपनी 119 फिल्मों का पूरा कलेक्शन 8.84 करोड़ रुपए में बेचना चाहता था। उसके एक ऐप पर पाबंदी लग गई, तो उसने दूसरा ऐप भी बनवा लिया था। कुंद्रा डिजिटल मीडिया से अवैध तरीके से पैसा कमाने के सारे पैंतरे आजमा रहा था। जब भंडाफोड़ हुआ तो उसने कुछ डेटा डिलीट करके अपने आप को बचाने की कोशिश की, पर मुंबई पुलिस की सप्लीमेंट्री चार्जशीट में दिए गए ब्योरे से पता चलता है कि राज का यह पैंतरा नाकाम रहा। बीते फरवरी में मड आईलेंड में पुलिस ने छापा मारा और पोर्न रैकेट का भंडाफोड़ किया। इस केस में टीवी एक्ट्रेस गहना वशिष्ठ का नाम सामने आया। पुलिस को गहना से राज कुंद्रा की कंपनी विहान इंटरप्राइज में काम कर रहे उमेश कामत के बारे में पता चला। उमेश राज कुंद्रा के लंदन स्थित बहनोई प्रदीप बख्शी को सारे वीडियो एक शेयरिंग एप्लिकेशन से भेजता था। प्रदीप कंपनी केनरीन के ऐप पर सारे वीडियो अपलोड करता था। उमेश यह ट्रांसफर राज के ऑफिस से ही करता था। चार्जशीट के मुताबिक, उमेश के मोबाइल से हॉटशॉट ऐप का अकाउंट और हॉटशॉट टेकन डाउन नाम के दो वॉट्सऐप ग्रुप के बारे में पता चला। इन दोनों ग्रुप का एडमिन भी राज ही था। राज और उसकी कंपनी के आईटी हेड रयान थारप, उमेश, प्रदीप बख्शी और दूसरे कर्मचारियों के बीच हॉटशॉट और 'बोली फेम' ऐप के कंटेंट पर काम करने वालों को पेमेंट, गूगल और एपल की तरफ से पेमेंट, यूजर्स रेवेन्यू के बारे में वॉट्सऐप ग्रुप में चैट हुई थी, मेल भेजे गए थे। आय का ब्योरा आदि स्टोर किया गया था।

सबूत मिटाने की कोशिश

राज जानता था कि उसका काम गैरकानूनी है और वह फंस सकता है। इस बात का सबूत यह है कि उसने बहुत सारा डेटा डिलीट करने की कोशिश की थी। गूगल प्ले और एपल स्टोर ने हॉटशॉट ऐप पर पोर्न कंटेंट होने की वजह से उसे प्रतिबंधित कर दिया था। उसके बाद राज ने दूसरा ऐप 'बोली फेम' बनवा लिया था, पर उसने हॉटशॉट का सारा डेटा भी डिलीट करने के लिए अपने आईटी डिपार्टमेंट को बोल दिया था। इस साल फरवरी में पुलिस केस के बाद राज ने अपने मोबाइल से हॉटशॉट ऐप के बारे में वॉट्सऐप मैसेज और चैट भी डिलीट कर दिए थे।

खुद को आरोपी मानने से इनकार

यह सारा डेटा डिलीट करवा के राज ने मान लिया था कि पुलिस उस तक नहीं पहुंच पाएगी। इसलिए पुलिस ने जब पहली बार नोटिस भेजा, तो राज ने 'क्या मैं आरोपी हूं, मैं इस लेटर पर सिग्नेचर नहीं करूंगा' ऐसा कहकर नकार दिया था। चार्जशीट में बताया गया है कि राज ने कभी पुलिस को सही तरीके से उत्तर नहीं दिया। पुलिस कार्रवाई में सपोर्ट भी नहीं किया।

राज के कर्मचारी ही बन गए साक्षी

पुलिस ने राज की कंपनी विहान इंटरप्राइज में काम करने वाले कुछ कर्मचारियों को गवाह बनाया है। अकाउंट, और दूसरे डिपार्टमेंट में काम करने वाले कर्मचारियों से मिले डेटा और बयानों से राज के पोर्न कारोबार की जानकारी मिली। गूगल प्ले और यूट्यूब के ईमेल से भी कन्फर्म हुआ। राज के 'हॉटशॉट' ऐप से पोर्न कंटेंट दिखाया जाता था। गूगल प्ले और यूट्यूब ने 'हॉटशॉट' ऐप प्रतिबंधित कर दिया गया था। एपल ने भी अपने स्टोर से यह ऐप हटा लिया था। वह सारे ईमेल पुलिस को हाथ लगे हैं।

वॉट्सऐप चैट से मिली सौदे की जानकारी

राज ने 119 फिल्मों के सौदे के लिए बात चलाई थी। एक वॉट्सऐप चैट में राज ने बताया है कि उसने 119 फिल्मों की लिस्ट भेजी है। यह फिल्मों के बदले में वह 12 लाख डॉलर (8.84 करोड़ रुपए) मांग रहा था। राज ने चैट में यह भी बताया है कि वह जो भेज रहा है, वह पूरी कंटेंट लाइब्रेरी की लिस्ट है।

दो साल में 98 लाख ग्राहक चाहता था राज

राज के मैनेजर रायन थारप का लैपटॉप बरामद किया गया। उसमें से अगले दो साल के लिए ग्राहक संख्या, कंटेंट कोस्ट, बाकी खर्च और आवक के टारगेट की समरी मिली है। इसमें कंटेंट जनरेट करने के खर्च के बारे में बताया गया है। इसलिए माना जा रहा है कि यह किसी ऐप बिजनेस का प्रोजेक्शन है। यह प्रोजेक्शन यूएस डॉलर में है, इसका मतलब यह ऐसे ही कंटेंट के बारे में है, जो विदेश में बेचा जाने वाला था।

चुनाव से पहले सीएम बदलने पर बिगड़े सिब्बल-कांग्रेस नेता ने पूछा

क्या इससे हो पाएगा? मनीष तिवारी को कांग्रेस के पुराने दिन याद आए

नई दिल्ली ■ एजेंसी

कांग्रेस के सीनियर नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री कपिल सिब्बल ने तीन राज्यों में अचानक हुए नेतृत्व परिवर्तन को लेकर सवाल उठाया है। सिब्बल ने पूछा कि क्या कांग्रेस और भाजपा की ओर से लिए गए ये फैसले उन्हें भविष्य के संकट से बचा पाएंगे? कांग्रेस नेता ने अपने ट्वीट में बीजेपी शासित 2 राज्यों (उत्तराखंड, गुजरात) और कांग्रेस शासित पंजाब का जिक्र किया, जहां के मुख्यमंत्री बदले गए हैं। सिब्बल ने सोशल मीडिया पर लिखा, सेनापति बदले जा रहे हैं- उत्तराखंड, गुजरात, पंजाब। सदियों पुरानी कहावत है कि सही समय पर उठाया गया छोटा कदम भविष्य की बड़ी समस्याओं से बचाता है, लेकिन क्या यह हो पाएगा? बता दें कि कपिल सिब्बल उन 23 नेताओं में से एक हैं, जिन्होंने पिछले साल कांग्रेस पार्टी की अध्यक्ष सोनिया गांधी को पत्र लिखकर संगठनात्मक सुधार की मांग की थी। कपिल सिब्बल ने बीजेपी शासित राज्य उत्तराखंड और गुजरात का नाम लेते हुए पंजाब का जिक्र भी किया है। सिब्बल ने पूछा है कि कांग्रेस और बीजेपी की ओर से उठाए गए इन कदमों से पार्टी को भविष्य के संकट से बचाया जा सकेगा?

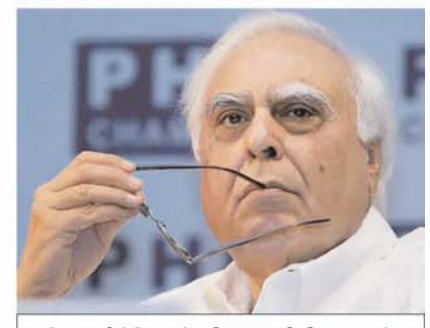

शाजिया इल्मी ने सिब्बल के ट्वीट पर चुटकी ली - भाजपा नेता शाजिया इल्मी ने सिब्बल के ट्वीट पर चुटकी ली है। उन्होंने लिखा कि शायद आपकी पार्टी में टांके लगाने के लिए टेलर स्विफ्ट की जरूरत है!

मनीष तिवारी ने लिखा- यह थी कांग्रेस! - कांग्रेस में मचे घमासान के बीच पार्टी के सीनियर नेता और लोकसभा सांसद मनीष तिवारी ने कुछ पुरानी तस्वीरें शेयर की हैं। उन्होंने 1989 में राजीव गांधी के समय हुए हस्द्ब अधिवेशन की तस्वीर शेयर की और लिखा, यह थी कांग्रेस! इसके बाद तिवारी ने एक और ट्वीट किया, जिसमें लिखा, एकला चलो रे में ही शान है।

भाजपा ने उत्तराखंड, गुजरात और कर्नाटक में मुख्यमंत्री बदले

उत्तराखंड में भाजपा ने त्रिवेंद्र रावत की जगह तीरथ सिंह रावत को मुख्यमंत्री बनाया था, लेकिन मुश्किल से चार महीने बाद ही उन्होंने इस्तीफा दे दिया। अब पुष्कर सिंह धामी राज्य के नए मुख्यमंत्री हैं। वहीं, गुजरात में विजय रूपाणी ने चुनाव से एक साल पहले मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। उनकी जगह भूपेंद्र पटेल को सीएम बनाया गया है। कांग्रेस नेता सिब्बल ने अपनी चेंजिंग गार्ड वाली पोस्ट में कर्नाटक का जिक्र नहीं किया। भाजपा शासित इस दक्षिणी राज्य में बीएस येदियुरप्पा की जगह बसवराज बोम्मई सीएम बनाए गए हैं।

बाबुल सुप्रियो टीएमसी में शामिल, भाजपा से दिया था इस्तीफा

कोलकाता ■ एजेंसी

पूर्व केंद्रीय मंत्री और पूर्व भाजपा सांसद बाबुल सुप्रियो शनिवार को तृणमूल कांग्रेस में शामिल हो गए। बाबुल को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी और पार्टी सांसद डेरेक ओब्रायन ने टीएमसी की सदस्यता दिलाई। 48 दिन पहले केंद्रीय मंत्रिमंडल में हुए फेरबदल के बाद सुप्रियो ने भाजपा छोड़ दी थी।

भाजपा से इस्तीफे के ऐलान के बाद बाबुल ने कहा था, मैं किसी दूसरी पार्टी में नहीं जा रहा हूं। हमेशा से भाजपा का सदस्य रहा हूं और रहूंगा, लेकिन कुछ देर बाद ही उन्होंने अपनी पोस्ट एडिट कर दी और उससे हमेशा भाजपा में रहने वाली लाइन हटा दी थी। टीएमसी में

शामिल होने के बाद बाबुल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान उन्होंने कहा, आज का दिन मेरे लिए बहुत बड़ा है। मुझे जनता की सेवा करने का मौका मिला है। ये सब पिछले 4 दिन में हुआ है। बाबुल ने कहा कि ममता पर बंगाल की जनता को भरोसा है। मैं काम करने के लिए टीएससी से जुड़ा हूं। उन्होंने कहा कि मुझे अपने इस फैसला बदलने पर गर्व है।

शशि थरूर ने कहा- कांग्रेस को स्थायी अध्यक्ष की जरूरत

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिए जाने के 2 साल बाद भी कांग्रेस को अब तक पूर्णकालिक अध्यक्ष नहीं मिल सका है। कांग्रेस अध्यक्ष की नियुक्ति को लेकर मुखर हुए ग्रुप-23 की मांग का असर कांग्रेस आलाकमान पर होता नहीं दिख रहा है। वरिष्ठ कांग्रेस नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री शशि थरूर ने भी पार्टी में एक स्थाई अध्यक्ष की जरूरत पर बल दिया है। शशि थरूर ने कहा पार्टी के संगठनात्मक ढांचे में और अधिक ऊर्जा की जरूरत है और इसके लिए पार्टी को अब एक स्थाई अध्यक्ष मिलना चाहिए। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शशि थरूर ने कहा कि सोनिया गांधी का नेतृत्व वह है, जिसे हम सभी प्यार करते हैं।

काबुल एयरपोर्ट ब्लास्ट के तार भारत से जुड़े

200 लोगों की जान लेने वाला फिदायीन 5 साल पहले दिल्ली में पकड़ा गया था

काबूल ■ एजेंसी

काबुल एयरपोर्ट पर हुए फिदायीन हमले में करीब 200 लोगों की मौत हुई थी। इस मामले में अब नए-नए खुलासे हो रहे हैं। रविवार को जानकारी सामने आई कि ब्लास्ट करने वाले फिदायीन हमलावर को 5 साल पहले भारत से डिपोर्ट किया गया था। यह दावा इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड सीरिया से जुड़ी एक मैगजीन में किया गया है। इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक फिदायीन हमलावर का नाम अब्दुल रहमान अल लोगरी था। मैगजीन में बताया गया कि उसे दिल्ली से गिरफ्तार किया गया था। वह कश्मीर में भारत

सरकार की कार्रवाई के विरोध में हिंदुओं को निशाना बनाना चाहता था। मैगजीन ने दावा किया है कि अब्दुल अफगानिस्तान ब्लास्ट को मिलाकर 250 से ज्यादा लोगों की जान ले चुका था। आतंकी संगठन की मैगजीन के मुताबिक अब्दुल अफगानिस्तान से आकर दिल्ली के लाजपत नगर इलाके में किराए पर कमरा लेकर रह रहा था। 2017 में सिक्योरिटी एजेंसियों को उसके इस्लामिक स्टेट से जुड़े होने की जानकारी मिली थी। सुरक्षा एजेंसियों ने उसे गिरफ्तार कर अफगानिस्तान डिपोर्ट कर दिया था। यहां अमेरिकी सेना ने अब्दुल को हिरासत में लेकर उससे कड़ी पूछताछ की थी। उससे मिली जानकारी के बाद सर्च ऑपरेशन चलाकर रु फोर्स ने द्रुस के कई ठिकानों को तबाह किया था। मैगजीन में कहा गया है कि काबुल एयरपोर्ट के जरिए बहुत से अफगानी ब्यूरोक्रेट्स देश छोड़कर जा रहे थे। इन लोगों ने अफगानिस्तान में अमेरिकी सैनिकों की मदद की थी।

संक्षिप्त समाचार

एसोचैम राज्य विकास परिषद के अध्यक्ष ने उद्योग मंत्री से भेंट की

शिमला। भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग मण्डल (एसोचैम) की हिमाचल प्रदेश राज्य विकास परिषद के अध्यक्ष जितेन्द्र सोढ़ी ने आज शिमला में उद्योग मंत्री बिक्रम सिंह से भेंट की। इस अवसर पर उद्योग मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने प्रदेश में औद्योगिकरण को विशेष बढ़ावा देते हुए निवेश के लिए नए द्वार खोले है। राज्य तथा केन्द्र सरकार की योजनाओं के क्रियान्वन से प्रदेश में स्वरोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी हुई है। इज आफ डूंइग बिजनेज में प्रदेश को देश भर में सातवां स्थान प्राप्त हुआ है तथा सुधारों के संदर्भ में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए अग्रणी राज्य बना है। उद्योग मंत्री ने प्रदेश सरकार की ओर से एसोचैम को हरसंभव सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया। जितेन्द्र सोढ़ी ने एसोचैम की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी देते हुए कहा कि एसोचैम राज्य विकास परिषद प्रदेश के युवाओं के उद्यमिता विकास के लिए उद्यमिता एवं नवाचार केन्द्र खोलने के लिए प्रयासरत है। इस केन्द्र के माध्यम से युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा साथ ही उन्हें आगे बढ़ने के विभिन्न अवसर प्रदान किए जाएंगे। राज्य विकास परिषद शीघ्र ही प्रदेश में रोजगार मेलों का आयोजन करेगी तथा पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए प्रयास किए जाएंगे। इस अवसर पर निदेशक उद्योग राकेश प्रजापति, एसोचैम के क्षेत्रीय प्रबंधक गौरव महाजन, वरिष्ठ सदस्य गगन कपूर और राज्य समन्वयक सुश्री काजल गुप्ता उपस्थित थी।

कोरोना से अनाथ हुए बच्चों को मिला लोकसभा अध्यक्ष का सहारा

कोटा। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के प्रयासों से कोरोना काल में अपने माता-पिता को खो चुके बच्चों के लिए कोटा में इंजीनियरिंग और मेडिकल की निःशुल्क कोचिंग की व्यवस्था की गई है. अब तक देश भर के करीब डेढ़ सौ से अधिक बच्चों को एलन कोचिंग संस्थान में निशुल्क कोचिंग दी जा रही है. ये बच्चे कोटा कैंप कार्यालय में पहुंचे और लोकसभा अध्यक्ष से मुलाकात की. कोटा कैंप कार्यालय में बच्चों ने लोकसभा अध्यक्ष से मुलाकात की. इस मौके उन्होंने एक बार फिर दोहराया कि बच्चों को कोटा में सभी सुविधाएं मिलेंगी. साथ ही उन्होंने बच्चों को आश्वस्त करते हुए कहा कि कभी भी चिंता मत करना, हम हमेशा आपके साथ खड़े हैं. लोकसभा अध्यक्ष के प्रयासों से बच्चों की न सिर्फ पढ़ाई बल्कि उनके आवास और भोजन की व्यवस्था भी निःशुल्क की गई है. बिरला ने पिछले दिनों रक्षाबंधन पर अपने माता-पिता या अपने पति को खो चुकी महिलाओं से राखी बंधवाई थी और उन्हें आश्वस्त किया था कि हमेशा एक भाई और अभिभावक की तरह दायित्व निभाएंगे.

जयंत चौधरी का किसानों को वचन- आपकी पगड़ी कभी झुकने नहीं दूंगा

बागपत। राष्ट्रीय लोकदल (रालोद) के अध्यक्ष जयंत चौधरी ने रविवार को यहां छपरौली में किसानों की लड़ाई लड़ने का वचन देते हुए उनसे कहा कि वह उनकी पगड़ी कभी झुकने नहीं देंगे। उन्होंने कहा, आपकी पगड़ी कभी झुकने नहीं दूंगा, जैसे जनता का सारा आशीर्वाद पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह और पूर्व केन्द्रीय मंत्री अजित सिंह को मिलता रहा, वैसे ही आशीर्वाद मुझे मिलेगा। मैं हमेशा आपके बीच रहूंगा और जब भी मान सम्मान की बात आएगी, कभी झुकूंगा नहीं। बागपत के छपरौली में रविवार को पूर्व केन्द्रीय मंत्री चौधरी अजित सिंह की रस्म पगड़ी और श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें उत्?तर प्रदेश के कई जिलों के अलावा हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, राजस्थान आदि राज्?यों के लोग पहुंचे थे। इन सभी राज्यों से खापों के चौधरी भी रालोद अध्यक्ष जयंत चौधरी को पगड़ी पहनाने के लिए आये थे। छपरौली के श्री विद्या मंदिर इंटर कॉलेज के मैदान में चौधरी अजित सिंह की श्रद्धांजलि सभा एवं रस्म पगड़ी कार्यक्रम में जयंत चौधरी ने हवन में आहुति दी। उन्होंने कार्यक्रम में पहुंचे लोगों का अभिवादन स्वीकार किया। वहां विभिन्न समाज और खाप के चौधरियों ने पहुंचकर अपने-अपने समाज की पगड़ी जयंत चौधरी के सिर पर बांधी। मंच से एलान किया गया कि अब जयंत चौधरी हमारे सेनापति होंगे।

हसीना सरकार की सख्ती

कट्टरपंथी संगठन का नेता रिजवान रफीक गिरफ्तार

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश की शेख हसीना सरकार ने कट्टरपंथी संगठन हिफाजत-ए-इस्लाम के खिलाफ सख्त कार्रवाई शुरू कर दी है। इस संगठन के एक बड़े नेता रिजवान रफीक को गिरफ्तार कर लिया गया है। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मार्च में बांग्लादेश दौरे पर गए थे। रिजवान ने इस दौरान न सिर्फ इस यात्रा का विरोध किया था, बल्कि लोगों को भड़काकर कई हिंदुओं के घर भी जला दिए थे। इस घटना की चर्चा वर्ल्ड मीडिया में हुई थी और इसके बाद से हसीना पर कट्टरपंथियों के खिलाफ कार्रवाई का दबाव बढ़ रहा था। 'ढाका ट्रिब्यून' अखबार से बातचीत में एडिशनल डिप्टी कमिश्नर इफ्तेखार उल इस्लाम ने कहा- हम उन तत्वों को कतई बख्शने वाले नहीं हैं, जो इस मुल्क में नफरत और अलगाववाद का एजेंडा चलाना चाहते हैं। हमारी स्पेशल टीम ने हिफाजत-ए-इस्लाम के नेता रिजवान रफीक को गिरफ्तार कर लिया है। उससे पूछताछ भी एक स्पेशल टीम करेगी। हम रफीक के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने जा रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, रिजवान को शुक्रवार और शनिवार की दरमियानी रात किसी अज्ञात स्थान से गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तारी के फौरन बाद उसे पूछताछ करने के लिए बनाई गई स्पेशल टीम के हवाले कर दिया गया।

गडकरी का ऑटोमोबाइल कंपनियों से सवाल

अमीरों की गाड़ियों में 8 एयरबैग और गरीब की में सिर्फ 2 क्यों

जालंधर ■ एजेंसी

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी के अनुसार छोटी कारों में भी सभी यात्रियों के लिए एयरबैग होने चाहिए, ताकि लोअर, मिडिल और गरीब तबके को भी यात्रा के दौरान जरूरी सुरक्षा मिल सके।

पीटीआई को दिए इंटरव्यू में गडकरी ने ऑटोमोबाइल कंपनियों से सवाल करते हुए कहा कि कंपनियां अमीर लोगों द्वारा खरीदी जाने वाली बड़ी कारों में ही 8 एयरबैग उपलब्ध कराती हैं वहीं छोटी कारों में 2 से 3 एयरबैग ही रहते हैं। ऐसा क्यों? उन्होंने कहा कि हमारे देश में गरीबों को भी सुरक्षा मिलनी चाहिए।

कम से कम 6 एयरबैग जरूरी

उन्होंने कहा कि छोटी कार ज्यादातर लोअर और मिडिल क्लास के लोग ही खरीदते हैं। यदि उनकी कारों में एयरबैग नहीं होगा, तो दुर्घटना की स्थिति में उनकी जान जा सकती है। ऐसे में मैं सभी कार निर्माता कंपनियों से अपील करूंगा कि वो अपनी सभी कारों में कम से कम 6 एयरबैग उपलब्ध कराएं।

कार की बढ़ जाएगी कीमत

नितिन गडकरी ने इस बात को स्वीकार किया एयरबैग की संख्या बढ़ाने से छोटी कारों की लागत कम से कम 3,000 से 4,000 रुपए बढ़ जाएगी। लेकिन गरीबों को भी पूरी सुरक्षा मिलनी चाहिए। 1 अप्रैल 2021 से सभी मॉडल की नई कारों में दो एयरबैग अनिवार्य कर दिए गए हैं। सुप्रीम कोर्ट की सड़क सुरक्षा पर बनी समिति के सुझाव के बाद मंत्रालय ने यह कदम उठाया है।

उड़ी सेक्टर में सुरक्षाबलों ने आंतकी घुसपैठ की बड़ी साजिश नाकाम की

जम्मू ■ एजेंसी

उत्तरी कश्मीर के बारामुला जिले के उड़ी सेक्टर में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर सुरक्षाबलों की मुस्तैदी के चलते आतंकियों की घुसपैठ की बड़ी साजिश नाकाम कर दी गई। घुसपैठ का प्रयास कर रहे आतंकियों पर गोलीबारी कर उन्हें वापस भगा दिया। जवानों ने इस क्षेत्र में तलाशी अभियान चलाने के साथ-साथ सतर्कता बढ़ा दी है। फिलहाल अभी भी तलाशी अभियान आसपास के इलाके में जारी है। घुसपैठ का यह प्रयास रविवार तड़के हुआ। जवानों ने वास्तविक नियंत्रण रेखा के साथ अंगुरी पोस्ट के पास गुलाम कश्मीर की ओर से कुछ आतंकवादियों को घुसपैठ करते हुए देखा। वास्तविक नियंत्रणर रेखा की सुरक्षा में जुटे सतर्क जवानों ने हलचल देखते ही गोलीबारी शुरू कर दी। घुसपैठ का यह प्रयास आतंकियों ने रविवार तड़के उस समय किया जब अभी

अंधेरा था। आतंकी आंधेरे का लाभ उठाकर घुसपैठ करने का प्रयास कर रहे थे। लेकिन नियंत्रण रेखा के इस पार जवान पूरी तरह से सतर्क थे। उन्होंने जैसे ही देखा कि आतंकियों का एक दल घुसपैठ करने का प्रयास कर रहा है। उन्होंने आतंकियों को रोकने के लिए प्रयास किया। इस पर आतंकवादियों ने जवानों पर गोलीबारी शुरू कर दी। जवानों ने भी इसकास करारा जवाब दिया। इसके बाद घुसपैठ का प्रयास कर रहे आतंकवादी वहां से भाग गए। इसके बाद आतंकियों ने इस पूरे क्षेत्र में तलाशी अभियान शुरू किया हुआ है। जिस क्षेत्र में घुसपैठ का प्रयास हुआ है, वहां पर घेन जंगल भी है।

स्पेसएक्स का पहला सिविलियन मिशन सफल

तीन दिन अंतरिक्ष में रहकर लौटे चार नॉन-एस्ट्रोनॉट पैसेंजर

फ्लोरिडा ■ एजेंसी

अमेरिकी बिजनेसमैन एलन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स के ड्रैगन स्पेसक्राफ्ट में अंतरिक्ष सैर पर गए चार आम लोग वापस लौट आए हैं। आज सुबह एयरक्राफ्ट ने फ्लोरिडा के तट के आगे अटलांटिक समुद्र में लैंडिंग की। चारों लोग तीन दिन पहले इंस्पिरेशन-4 नाम के इस मिशन पर गए थे।

भारतीय समय के मुताबिक, सुबह 5.30 बजे स्पेसएक्स कैप्सूल पैराशूट के साथ समुद्र में उतरा। उस समय अमेरिका में शाम हो रही थी। सूरज ढलने से कुछ देर पहले ही कैप्सूल वहीं आकर उतरा जहां से तीन दिन पहले उसने अंतरिक्ष की उड़ान भरी थी। समुद्र में कैप्सूल के उतरने के बाद स्पेसएक्स के मिशन कंट्रोलर ने कहा- स्पेसएक्स की तरफ से पृथ्वी पर आपका स्वागत है। आपके मिशन ने दुनिया को दिखा दिया है कि स्पेस हम सभी के लिए है।

इस मिशन के जरिए एलन मस्क ने 200 मिलियन डॉलर इकट्ठा करने का लक्ष्य रखा था। यह फंड सेंट ज्यूड चिल्ड्रन रिसर्च हॉस्पिटल को दिया जाना था। मिशन पूरा होने तक 160 मिलियन डॉलर जुटा लिए गए थे। जिसके बाद एलन मस्क ने 50 मिलियन डॉलर अपनी तरफ से दिए।

कौन थे क्रू मेंबर?

जैरेड आइसेकमैन : *मिशन की पूरी कमांड इसाकमैन के हाथों में थी। 38 साल के आइसेकमैन शिफ्ट4पेमेंट नामक पेमेंट कंपनी के फाउंडर और सीईओ हैं। 16 साल की उम्र में ही उन्होंने इस कंपनी की शुरुआत की थी और आज वे अरबपति हैं। वे प्रोफेशनल पायलट हैं और अपनी पायलट ट्रेनिंग कंपनी के जरिए अमेरिकी एयरफोर्स के पायलट्स को ट्रेनिंग देते हैं।*

हेयली आर्केनो- *हेयली कैंसर सर्वाइवर हैं। 29 साल की हेयली अंतरिक्ष में जाने वाली सबसे कम उम्र की अमेरिकी नागरिक हैं। उन्हें हड्डियों का कैंसर था और उनका इलाज टैनेसी के सेंट जूड हॉस्पिटल में हुआ था। मिशन में हेयली को मेडिकल ऑफिसर की जिम्मेदारी मिली है।*

शॉन प्रोक्टर- *51 साल के प्रोक्टर एरिजोना के एक कॉलेज में जियोलॉजी की प्रोफेसर हैं। प्रोक्टर के पिता अपोलो मिशन के दौरान नासा के साथ काम कर चुके हैं। वे खुद कई बार नासा के स्पेस प्रोग्राम में पार्टिसिपेट कर चुकी हैं।*

क्रिस सेम्ब्रोस्की : *42 साल के क्रिस अमेरिकी एयरफोर्स के पायलट रहे हैं और इराक युद्ध में भी शामिल थे। फिलहाल क्रिस एयरोस्पेस और डिफेंस निर्माता कंपनी लॉकहीड मार्टिन के साथ काम कर रहे हैं।*

बन गया इतिहास

इस सफर पर गया क्रू दुनिया में पहला था, जो बिना किसी प्रोफेशनल एस्ट्रोनॉट के अंतरिक्ष में गया था। मिशन कमांडर जैरेड आइसेकमैन ने लैंडिंग के बाद कहा- बहुत-बहुत शुक्रिया स्पेसएक्स। यह यह हमारे लिए जबरदस्त यात्रा थी, जिसकी अभी सिर्फ शुरुआत ही हुई है। जैरेड आइसेकमैन अरबपति है और उन्होंने ही इस ट्रिप के लिए फंडिंग दी थी। स्पेसएक्स के फुली ऑटोमेटिड ड्रेगन रॉकेट कैप्सूल ने बुधवार रात को लिफ्टऑफ किया था, जिसके बाद यह 585 किमी की ऊंचाई पर पहुंचा। इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन से भी 160 किमी आगे निकलकर क्रू ने पृथ्वी के नजारे देखे।

25 सितंबर से शुरू होगा हबीबगंज अंडरपास का निर्माण कार्य

भोपाल। राजधानी में हबीबगंज नाका से सावरकर सेतु के बीच हबीबगंज रेल अंडरपास का काम 25 सितंबर से चालू हो जाएगा। आठ माह में यह अंडरपास बनकर तैयार होगा। इसके बनने से रोजाना डेढ़ लाख राहगीरों को सहूलियत होगी। बता दें कि इसका निर्माण दो साल पहले शुरू हुआ था। पूर्व में कोरोना संक्रमण के कारण काम बंद करना पड़ा। फिर बारिश के कारण काम बंद है। अभी इस क्षेत्र में रेलवे ट्रैक के नीचे से आवागमन के लिए एक पुलिया है, जिसे पानी की निकासी के लिए बनाया गया था, वहीं से राहगीर आना-जाना करते हैं। इस पुलिया में जरा-सी बारिश के बाद ही जलभराव हो जाता है, जिससे राहगीरों को बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। यह अंडरपास हबीबगंज से इटारसी की तरफ जाने वाले रेल मार्ग पर वीर सावरकर सेतु के नीचे बन रहा है। 10 नंबर मार्केट की तरफ से खोदाई हो चुकी है।

समाज के विकास के लिए प्रतिबद्ध है प्रदेश सरकार: वीडी शर्मा

भोपाल। सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास भारतीय जनता पार्टी का मूल मंत्र है। प्रदेश सरकार ने राजा शंकरशाह और कुंवर रघुनाथ शाह के बलिदान दिवस पर जो घोषणाएं की हैं, वे समरसता के साथ सबका साथ और सबका विकास की भावना को ही प्रदर्शित करती हैं। मैं जनजातियों के हित में की गई इन घोषणाओं के लिए मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान को धन्यवाद देता हूं और प्रदेश की जनता को बधाई देता हूं। यह बात भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने रविवार को मीडिया को संबोधित करते हुए कही। श्री शर्मा ने बलिदान दिवस कार्यक्रम में शामिल होकर जनजातीय नायकों को सम्मान देने के लिए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का भी आभार जताया। प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी हमेशा उन क्रांतिकारियों के बारे में सोचती रही है, जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया।

16 साल की किशोरी ने फॉसी लगाकर की खुदकुशी

भोपाल। राजधानी के कोलार थाना इलाके मे स्थित बोरदा पठार में 16 साल की नाबालिग किशोरी ने फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। पुलिस ने बताया कि फिलहाल खुदकुशी के कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। हादसे के समय किशोरी के पिता और मां दोनों काम पर गए हुए थे। मां के साथ छोटा भाई भी चला गया था। किशोरी के पिता दोपहर के समय खाना खाने घर आये तो उन्होंने बेटी का शव फांसी के फंदे पर झूलता देखा। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर कारणो की जांच शुरु कर दी है। पुलिस के अनुसार राजकुमार रैकवार गांव बोरदा पठार में रहते हैं, ओर मिस्त्री का काम करते है। उनके परिवार में पत्नी के अलावा पांच साल का बेटा और 16 साल की बेटी पूर्णिमा रैकवार है। पूर्णिमा घरेलू कामकाज संभालती थी। राजकुमार ने पुलिस को बताया कि शनिवार को वे अपनी पत्नी के साथ अपने अपने काम पर चले गए थे। दोपहर में लौटे तो दरवाजा अंदर से बंद था।

मामूली विवाद पर दो भाईयो ने अधेड़ ऑटो चालक को चाकू मारा

भोपाल। राजधानी के टीटी नगर थाना इलाके में मामूली विवाद पर अधेड़ ऑटो चालक पर दो भाईयों ने चाकू से हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर लिया है। टीटी नगर पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 56 वर्षीय दिनेश बंसल अर्जुन नगर में परिवार के साथ रहता है, और ऑटो चलाता है। बीती शाम को वह ऑटो खड़ा कर अपने घर चला गया। थोडी देर बाद जब वो बाहर निकला तो उसी मोहल्ले में रहेन वाला दादू उर्फ पुष्पेंद्र और उसका भाई सुमित ने दिनेश के साथ मारपीट कर दी। इसके बाद रात करीब ग्यारह बजे विवाद बढ़ने पर दोनों भाइयों ने फरियादी पर लोहे के रॉड और चाकू से हमला कर दिया। गंभीर रूप से घायल अधेड़ को उपचार के लिये अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

घरेलू गैस सिलेंडरों का व्यावसायिक कारोबार करने वालो पर कार्यवाही

भोपाल। राजधानी के बैरसिया इलाके में अवैध रूप से जमा कर घरेलू गैस सिलेंडरों का व्यावसायिक उपयोग को लेकर कनिष्ट आपूर्ति अधिकारी की शिकायत पर बैरसिया थाने में दो आरोपियों के खिलाफ आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज कर उन्हे हिरासत में लिया है। थाना पुलिस ने बताया कि जिला खाद्य एवं आपूर्ति विभाग के कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी मयंक द्विवेदी ने शिकायत दर्ज कराई है, कि बीती 10 सितंबर को आकाश बैटरी की दुकान पर अवैध तरीके से घरेलू सिलेंडर बेचते हुए दो लोगों को पकड़ा गया था।

...अगले बरस फिर जल्दी आ की कामना के साथ हुआ प्रतिमाओं का विसर्जन

अतुल्य भास्कर, भोपाल

रविवार को अनंत चतुर्दशी पर दस दिनी गणेशोत्सव का समापन हुआ। सुबह से ही शहर के विभिन्न विसर्जन घाटों पर पूजा-अर्जना के बाद भगवान गणेश की प्रतिमाओं का विसर्जन का सिलसिला शुरू हो गया था। प्रशासन ने मूर्तियों के विसर्जन के लिए सरोवरों पर स्थान निर्धारित किए हैं। हालांकि कोरोना गाइड लाइन प्रभावी होने के कारण इस वर्ष भी विसर्जन चल समारोह, डीजे आदि पर रोक है। इस लिए उत्सव का समापन सादगी से हो रहा है। विसर्जन स्थलों पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम हैं।

राजधानी में सुबह से ही भगवान गणेश की प्रतिमाओं के विसर्जन का सिलसिला शुरू हो

गया था। प्रेमपुरा विसर्जन घाट, रानी कमलापति विसर्जन घाट, खटलापुरा मंदिर घाट, बेहटा घाट, शाहपुरा तालाब, हथाईखेड़ा डैम आदि में श्रद्धालु भगवान गजानन की प्रतिमाएं लेकर पहुंचें। घाट पर पार्वती नंदन की आरती की गई। इसके बाद %गणपति बप्पा मोरिया, अगले बरस फिर जल्दी आ% की कामना के साथ प्रतिमाओं को जल में विसर्जित किया गया। सभी विसर्जन स्थलों पर बड़ी प्रतिमाओं के विसर्जन के लिए प्रशासन ने क्रेन का इंतजाम किया है। नगर निगम के प्रशिक्षित कर्मचारी सावधानी से बड़ी मूर्तियों का विसर्जन कर रहे हैं। कोराना गाइड लाइन के चलते एक उत्सव समिति के अधिकतम दस लोग ही विसर्जन स्थल पर जा सकते हैं।

प्रेमपुरा घाट पर चार क्रेन, दो प्लेटफार्म

शहर के सबसे बड़े विसर्जन स्थल प्रेमपुरा घाट पर मूर्तियों के विसर्जन के लिए दो प्लेटफार्म बनाए गए हैं। चार बड़ी क्रेन मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त दो हाइड्रा क्रेन भी उपलब्ध हैं। क्रेन ऑपरेटर जब्बार खान ने बताया कि सुबह से ही प्रतिमाओं के आने का सिलसिला जारी है। छोटी प्रतिमाओं को हाइड्रा प्लेटफार्म की मदद से विसर्जित किया जा रहा है। दोपहर करीब ढाई बजे लगभग छह फीट की एक प्रतिमा विसर्जन के लिए पहुंची।

भोपाल में खाद्य विभाग की कार्रवाई, न्यू फेमस जूस कॉर्नर सील

फफूंद लगी मिठाई से लेकर जूस में कलर, सड़े फल मिले

अतुल्य भास्कर, भोपाल

भोपाल में जिला प्रशासन की टीम ने खाद्य विभाग के साथ जब न्यू फेमस जूस कॉर्नर नाम के रेस्टोरेंट पर रविवार दोपहर छापा मारा, तो सब दंग रह गए। फफूंद लगी मिठाई से लेकर जूस में कलर, सड़े फल, एक्सपाईरी डेट के बिस्किट और अन्य सामान बड़ी मात्रा में मिले। कोल्ड ड्रिंक्स की बोतल तक में फफूंद मिली है। घर में उपयोग होने वाले घरेलू गैस सिलेंडर का उपयोग किया जा रहा था। इसके बाद सभी के सैंपल लेकर उन्हें जांच के लिए भेज दिया। रेस्टोरेंट के खिलाफ कई दिनों से शिकायतें मिल रहीं थी। कार्रवाई के बाद टीम ने रेस्टोरेंट को सील कर दिया।

गोविंदपुरा एसडीएम मनोज वर्मा ने बताया कि 80 फीट रोड, अशोका गार्डन स्थित न्यू फेमस जूस कॉर्नर रेस्टोरेंट के खिलाफ कई दिनों से शिकायतें मिल रही थीं। खाद्य विभाग के अधिकारियों के साथ रविवार को रेस्टोरेंट पर छापा मारा। यहां पर बड़ी मात्रा में एक्सपाईरी और फफूंद लगी मिठाईयां मिली हैं। इसके अलावा

खराब फल मिले। इसका ही जूस लोगों को पिलाया जा रहा था। रेस्टोरेंट से रंग भी मिले हैं। अन्य कई पैक्ड फूड की एक्सपाईरी निकलने के बाद भी बेचे जा रहे थे।सभी सामान को जब्त कर लिया है। सरकार ने मिलावटी और खराब खाने को लेकर सख्त कानून बनाए हैं, लेकिन अभी तक किसी के खिलाफ सख्त कार्रवाई नहीं की गई। खाद्य विभाग सैंपल जब्त कर जांच के लिए भेज देगी। खाद्य विभाग की सैंपल जांच की गति इतनी धीमी रहती है कि पूरा मामला बाद में ठंडे बस्ते में चला जाता है।

किचिन का भी निरीक्षण किया

टीम ने पूरे रेस्टोरेंट के एक सामान और किचिन का निरिक्षण किया। इस दौरान किचिन में कुछ कर्मचारी मुंह छिपाते नजर आए। टीम को जांच में वर्तन गंदे मिले हैं। रेस्टोरेंट के मालिक का नाम मोहम्मद साजिद बताया जाता है। टीम ने मौके से खुले खाने-पीने के सामान के साथ ही पैक्ड फूड भी जब्त किया।

पुलिस की मेहरबानी हमेशा रही

इसके खिलाफ कई दिनों से शिकायतें मिल रहीं थी। यह सिर्फ रेस्टोरेंट में खाने को लेकर नहीं थी, बल्कि अन्य तरह की भी थीं। जैसे लेट नाइट तक दुकान का खुला रहना। गाड़ियों का मुख्य सड़क पर ही पार्क होना। इससे ट्रैफिक भी बाधित होता था, लेकिन पुलिस कभी कार्रवाई नहीं करती नजर आई।

ट्रेन में लूट, चोरी करने वाला गिरोह पकड़ाया

अतुल्य भास्कर, भोपाल

भोपाल जीआरपी ने ट्रेनों में यात्रियों के साथ चोरी, लूट करने वाले चार शातिर बदमाशों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी ट्रेन के जनरल कोच में यात्रियों को गप्पे खिलाकर (एक तरह का जुआ) लूट करते थे। यात्रियों को झांसे में लाने वह गेम में उन्हें दोगुना पैसे देने का लालच देते हैं। यात्री जैसे ही पैसा लगाता उसी समय गिरोह के सदस्य उसके साथ मारपीट कर पैसे छीनकर भाग निकलते। आरोपियों का आपराधिक रिकार्ड है।

जीआरपी भोपाल टीआई दिनेश चौहान ने बताया कि सलामतपुर निवासी इरफान खान,गजराज अहिरवार,मनीष शर्मा व भोपाल निवासी नवाब खान उर्फ नफीस खान को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस की अब तक पूछताछ में आरोपियों ने 20 से अधिक वारदात कबूली हैं। आरोपी वर्ष 2012 से इस तरह का अपराध कर रहे हैं।

डिब्बे के खेल को बना लिया लूट, चोरी का धंधा

टीआई चौहान ने बताया कि गप्पे खिलाना एक तरह का जुआ है। आरोपी तीन डिब्बे लिए रहते हैं। डिब्बे में वह हार-जीत का दाव लगवाते हैं। यात्रियों को गेम में शामिल करने गिरोह के सदस्य खुद यात्री बनकर हारजीत का दाव लगाते हैं। इसके बाद लालच में आकर कुछ यात्री भी इनके साथ दाव लगाने लगते हैं। बाद में आरोपी यात्री का पैसा लेकर फरार हो जाते हैं। गिरोह भोपाल, सांची, सलामतपुर, दीवानगंज, विदिशा, बीना क्षेत्र में ट्रेनों में वारदात कर चुके हैं। घटना की सूचना मिलने पर जब भी पुलिस इन्हें पकड़ने का प्रयास किया तब-तब आरोपी पुलिस पर हमला कर भाग जाते हैं।

उच्च शिक्षा विभाग द्वारा प्रदेश के 1301 निजी और सरकारी कॉलेजों की यूजी-पीजी की करीब 12 लाख सीटों पर प्रवेश प्रक्रिया जारी है। यूजी कक्षाओं में दोनों राउंड में करीब 10 लाख सीटों में से करीब एक लाख 61 हजार विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है, जबकि सा.ढे आठ लाख सीटें खाली हैं। वहीं पीजी की 2.34 लाख सीटों में से केवल करीब 78 हजार सीटें ही भरी हैं, इसमें करीब डे.ढ लाख सीटें खाली हैं।

सीनियर की प्रताड़ना से तंग आकर दी थी जान

1 लाख रुपए वसूलने के लिए किया प्रताड़ित, दो लोगों पर केस दर्ज

अतुल्य भास्कर, भोपाल

भोपाल के अशोका गार्डन इलाके में 15 दिन पहले बजाज फाइनेंसकर्मी ने अपने सीनियर की प्रताड़ना से तंग आकर खुदकुशी की थी। अशोका गार्डन पुलिस ने जांच के बाद उसके सीनियर के साथ अमन इंटरप्राइजेज के संचालक के खिलाफ मामला दर्ज किया है। फिलहाल, आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं हो सकी है। मामले की जांच कर रहे एसआई डीएस सिंह ने बताया कि शिवनगर हिनौतिया निवासी कार्तिक यादव बजाज फाइनेंस में नौकरी करता था। 15 दिन पहले उसने खुदकुशी कर ली

थी। सुसाइड से पहले उसने दो वीडियो वायरल किया था। जिसकी जांच में सामने आया कि बजाज फाइनेंस में उसका सीनियर दीपक चौधरी व अमन इंटरप्राइजेज का मालिक नरेन्द्र हासवानी की प्रताड़ना से तंग आकर खुदकुशी की थी।

एसआई डीएस सिंह ने बताया कि कार्तिक ने 26 हजार रुपए की अमन इंटरप्राइजेज से एक स्ब्बष्ठ खरीदी थी, जिसकी किस्तें उसने अपने सीनियर दीपक चौधरी को दी थीं, लेकिन दीपक ने किस्त ही नहीं भरीं। डीलर नरेन्द्र हासवासी उससे 1 लाख रुपए की मांग कर रहा था। मैं कार्तिक यादव, अपने पूरे होश-ओ-हवास में यह कह रहा हूं कि अमन इंटरप्राइजेज से मैंने 26 हजार रुपए की एक स्ब्बष्ठ टीवी फाइनेंस कराई थी। तब उस समय मैं बजाज फाइनेंस में काम करता था। मेरे सीनियर दीपक चौधरी ने अपने पिता के कार्ड से ये फाइनेंस कराया था। उन्होंने कहा था कि मैं किस्तें चुका दूंगा, तुम मुझे हर महीने पैसे देते रहना।

मध्य प्रदेश में पदोन्नति और महंगाई भत्ता को लेकर आंदोलन करने की तैयारी में कर्मचारी

अतुल्य भास्कर, भोपाल

मध्य प्रदेश भर के कर्मचारी पदोन्नति और महंगाई भत्ता की मांग को लेकर चार चरणों में आंदोलन करेंगे। इसकी सूचना सोमवार को सरकार को दी जाएगी। यह आंदोलन अधिकारी कर्मचारी संयुक्त मोर्चा के नेतृत्व में होगा। इसका निर्णय शनिवार राजधानी में कर्मचारी भवन में बुलाई बैठक में लिया गया है। यह जानकारी मोर्चा के अध्यक्ष जितेंद्र सिंह, संयोजक एसबी सिंह और प्रवक्ता सुभाष शर्मा ने दी है। संयुक्त मोर्चा के महेंद्र शर्मा ने बढ़ती महंगाई के बावजूद भी महंगाई भत्ता का लाभ नहीं मिलने पर नाराजगी जताई। बैठक में उन्होंने कहा कि केंद्र के कर्मचारियों को इसी

कोरोना संक्रमण के दौरान महंगाई भत्ता का लाभ दिया है, जो बढ़कर 28 फीसद हो गया है। जबकि राज्य सरकार कोरोना संक्रमण की आड़ ले रही है और इसके कारण महंगाई भत्ता 12 फीसद ही है। मोर्चा के अध्यक्ष जितेंद्र सिंह ने कहा कि कर्मचारियों का समय-समय पर करोड़ों रुपये एरियर रोका गया है, जिसका भुगतान अभी तक नही किया है। वहीं ओपी कटियार ने कहा कि वेतन विसंगति एक बड़ी समस्या रही है, जो समय-समय पर बढ़ती ही गई है। कुछ ही मामलों में निराकरण हुआ है। अभी भी नुकसान भुगतना पड़ता है। मोर्चा के संरक्षक भुवनेश कुमार पटेल ने कहा कि संविदाकर्मियों के साथ पूर्व की तुलना में शोषण बढ़ा है। सालों से काम करने वाले संविदाकर्मियों को अब तक नियमित नहीं किया है, सरकार को विचार करना चाहिए। संयोजक एसबी सिंह ने कहा कि स्थायीकर्मियों की दुर्दशा बढ़ती ही जा रही है। उन्हें स्थाई करना चाहिए। हजारों की मौत हो चुकी है। परिवार के सदस्यों को अनुकंपा नियुक्ति नहीं देना दुर्भाग्यपूर्ण है।

रात्रि 2 बजे गस्त के दौरान पुलिस ने पकड़ा खाद्यान से भरा मालवाहक

खाद्य विभाग की बोरियों में मिला 19 क्विंटल चावल एवं ज्वार

अतुल्य भास्कर, सागर/देवरीकला

देवरी थाना पुलिस ने शुक्रवार रात्रि 2 बजे गस्त के दौरान नगर के पटैल वार्ड में खाद्यान से भरे हुए मालवाहक को संदिग्ध अवस्था में पकड़ा है जिसमें सरकारी बोरियों में भरा लगभग 19 क्विंटल चावल एवं ज्वार पाया गया है। राशन दुकान के खाद्यान की कालाबाजारी के इस संदिग्ध मामले में एसडीएम के निर्देश पर खाद्य विभाग द्वारा जांच की जा रही है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार शुक्रवार रात्रि लगभग 2 बजे जब देवरी थाना पुलिस गस्त के दौरान देवरी नगर के पटैल वार्ड स्थित बेलढाना रोड पहुंची तो पाया कि एक पिकअप वाहन सड़क की पटरी पर कीचड़ में धंस गया था जिससे बोरिया दुसरे मालवाहक छोटा हाथी में लादी जा रही थी। पुलिस द्वारा उक्त संबंध में मौके पर मौजूद छोटा हाथी के चालक अरविंद से पूछताछ करने पर उसने बताया कि उसे नगर के एक गल्ला व्यापारी का फोन आया था जिसने वाहन फंस जाने के कारण माल परिवहन करने को कहा था। मामले को संदिग्ध पाकर पुलिस द्वारा उक्त मालवाहक छोटा हाथी एमपी 15 एलए 5122 को माल सहित थाने में रखवाया गया था। मौके पर मौजूद पिकअप एमपी. 15 जी 2100 को कीचड़ में फंस ने से एवं चालक परिचालक मौके पर न होने के कारण पुलिस वही छोड़ दिया था।जो सुबह घटनास्थल से गायब पाया गया जिसकी पुलिस द्वारा तलाश की जा रही है।सरकार द्वारा जनकल्याणकरी योजनाओं के तहत राशन दुकानों को उपलब्ध कराये जा रहे खाद्यान की संभावित तस्करी के इस मामले में शनिवार सुबह एसडीएम देवरी ने खाद्य निरीक्षक पलक खरे को जांच के निर्देश दिये थे जिसके बाद से खाद्य विभाग द्वारा मामले में जांच की जा रही है। खाद्य विभाग के अधिकारियों ने अपनी प्रारंभिक जांच में पाया है कि उक्त खाद्यान सरकारी राशन दूकानों में भरा पाया गया है जिसकी सिलाई भी सरकारी मशीन से किया जाना प्रतीत हो रहा है। मामले में विभाग द्वारा एक संदिग्ध दूकान द्वारा मामले में कारगुजारी की आशंका को ध्यान में रखकर स्टॉक मिलान एवं आवंटन संबंधी जानकारी जुटाई जा रही है। विभाग द्वारा बरामद 24 ज्वार की बोरिया एवं 14 चावल की बोरिया पुलिस अभिरक्षा से प्राप्त कर बेयर हाउस में सुर्पुदनामा पर रखवाया गया है।

नही रुक रही कालाबाजारी, कार्रवाई पर भी सवाल: राशन दुकानों के माध्यम से शासन द्वारा जनकल्याणकारी योजनाओं के तहत भारी अनुदान पर प्रदाय किये खाद्यान की तस्करी का यह पहला मामला नही है। विकासखण्ड में भोले भाले गरीबों का खाद्यान हड़पने के कई मामले उजागर हो चुके है जिसमें से कुछ पर कार्रवाई हुई और कई मामले सरकारी कार्यालयों में लंबित है। पिछले 2 वर्षो में कोरोना काल भले ही आम गरीबो को आपदा और आफत का काल रहा हो परंतु इस गोरखधंधे में लिप्त लोगों के लिए यह आपदा में अवसर का स्वर्णिम समय साबित हुआ है।

हालिया वर्ष में केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा कोरोनाकाल में गरीब परिवारों को नि:शुल्क खाद्यान की सौगात दी गई जिसमें माह अप्रेल नवम्बर तक नियमित वितरण के अतिरिक्त प्रतिव्यक्ति 5 किलो खाद्यान नि:शुल्क प्रदाय किया जा रहा है।

वस्त्र नहीं वासनाओं का त्याग आकिंचन धर्म : मुनि निष्पक्ष सागर

अतुल्य भास्कर, भोपाल

शहर के जिनालयों में आत्मशुद्धि के पर्युषण महापर्व में शनिवार को भगवान जिनेंद्र का अभिषेक शांतिधारा के साथ करते हुए उत्तम आकिंचन धर्म की आराधना हुई। उधर चौक जैन धर्मशाला में मुनिश्री निष्पक्ष सागर महाराज ने श्रद्धालुओं के समक्ष प्रवचन देते हुए कहा कि प्रकृति में लवलीन हो जाना, विकृति से हट जाना ही आकिंचन है। जहां किंचित भी राग हो, वहां आकिंचन भाव हो ही नहीं सकता। वस्त्र नहीं वासनाओं को छोड़ना आकिंचन धर्म है। समाज के प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया कि मुनिश्री निष्पक्ष सागर महाराज ने आठ वर्षीय बच्चों का उपनयन संस्कार किया। उपनयन संस्कार की क्रियाओं में आठ वर्षीय बच्चों द्वारा भगवान जिनेंद्र का प्रथम अभिषेक कर पूजा-अर्चना की जाती है। साथ ही जीवन के कल्याण के लिए एक छोटा सा नियम भी लिया जाता है।

झिरनो जैन मंदिर में पर्युषण पर्व में श्रद्धा, भक्ति और आस्था से सराबोर होकर श्रद्धालु धार्मिक अनुष्ठानों में लीन हैं। मंदिर समिति के उप संयोजक मनोज जैन एडवोकेट ने बताया जिनालय में मूलनायक भगवान नेमिनाथ का महामस्तकाभिषेक और अष्ट द्रव्यों से पूजा अर्चना की गई। शाम को 1008 दीपकों से महाआरती और णमोकार महामंत्र और भक्तामर पाठ का वाचन किया गया।

प्रभु जिनेंद्र के अनंत गुणों की वंदना की

श्री समवशरण जिनालय में मुमुक्षु मंडल के सानिध्य में भक्तिभाव से 10 लक्षण महापर्व की आराधना हो रही है। मुमुक्षु मंडल के अरुण वर्धमान, मोहित बडकुल ने बताया श्रद्धालु अष्ट द्रव्यों से भक्ति-भाव से भगवान जिनेंद्र के अनंत गुणों की वंदना कर रहे हैं। दोपहर को तत्व चर्चा और समयसार ग्रंथ का वाचन हो रहा है। सायंकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति में पाठशाला के बच्चों द्वारा भारतीय संस्कृति और संस्कारों से ओत-प्रोत नृत्य नाटिकाओं की प्रस्तुति की जा रही है। पं. जेपी. दोशी मुंबई ने आकिंचन धर्म को समझाते हुए कहा कि आकिंचन धर्म तो आत्मा का स्वभाव है। जब तक स्वभाव से दूर हो, तब तक आकिंचन स्वभाव कहां। कुछ भी करना प्रवृत्ति मार्ग है, आकिंचन धर्म निवृत्ति का मार्ग है।

चौबीस तीर्थंकर भगवंतों की आराधना

पंचशील नगर मंदिर समिति के अध्यक्ष संतोष जैन कुंदन ने बताया कि चौबीसी जिनालय पंचशील नगर में श्रद्धालुओं ने चौबीस तीर्थंकर भगवंतों की आराधना की। उनके अनंत गुणों की वंदना कर उत्तम आकिंचन धर्म की पूजा-अर्चना की गई। यहां शाम को बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी जा रही है। राजधानी के समीप तीर्थ क्षेत्र कुराना में प्रतिदिन कई श्रद्धालु अभिषेक कर प्राचीन भगवान आदिनाथ की खडगासन प्रतिमा की पूजा अर्चना कर रहे हैं। मंदिर समिति के संयोजक राजीव जैन ने बताया कि जिनालय में श्री आदिनाथ विधान के अर्घ्य समर्पित कर जगत कल्याण की कामना की गई। यहां शाम को संगीतमय भक्तामर जी का वाचन और आदिनाथ चालीसा का पाठ हो रहा है।